

वर्ष-15, अंक-06

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

अगस्त 2019

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

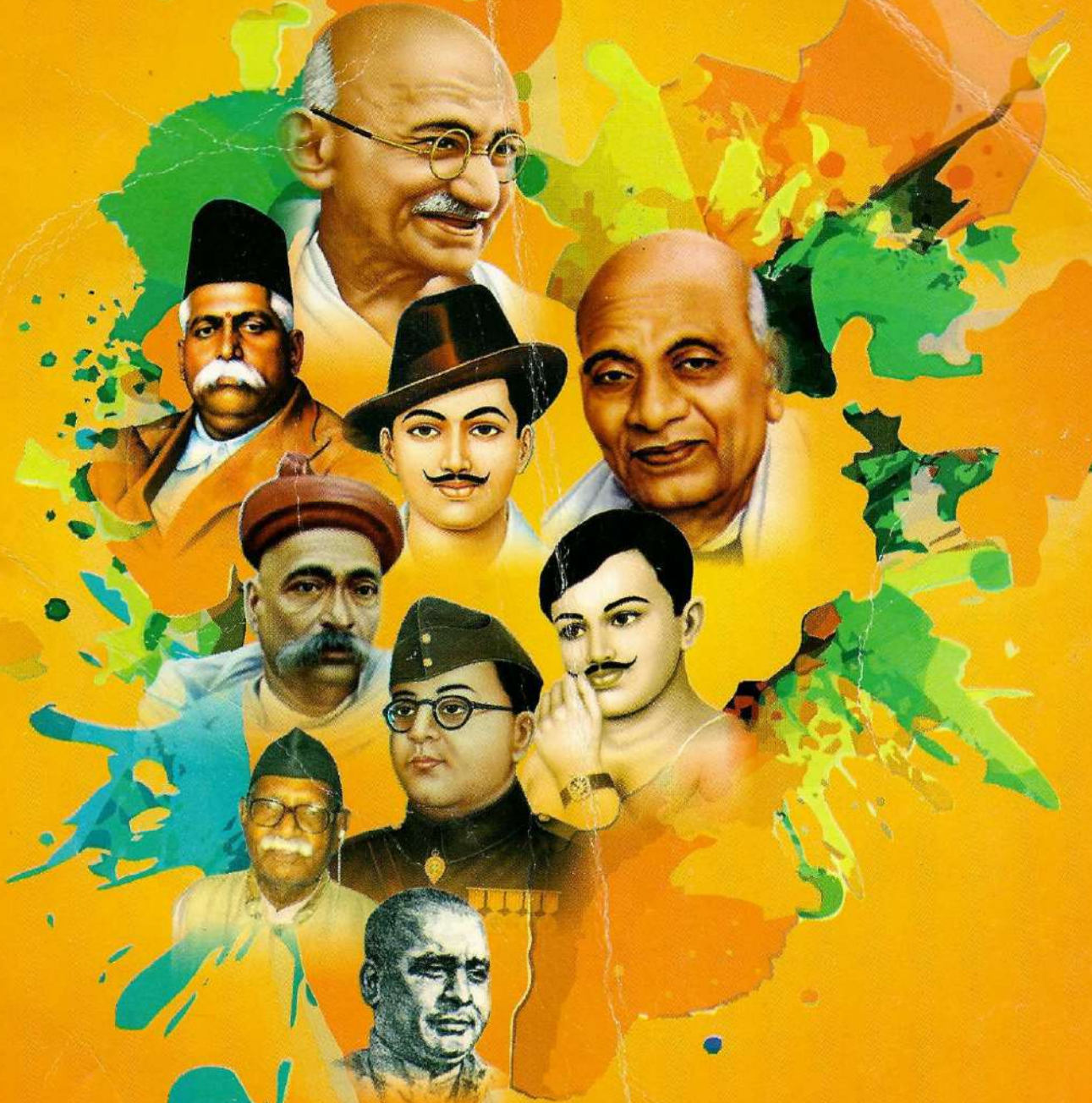
आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका



सेवा संवाद



जन्नी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय



राजेश जी वरिष्ठ चिकित्सकों के साथ



वरिष्ठ चिकित्सकों के द्वारा नेत्र परीक्षण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में प्रतिक्षारत रोगीजन



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में प्रतिक्षारत रोगीजन



भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-06

वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

अगस्त 2019

मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/-

आजीवन : रु. 2000/-

वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ० अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ० देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक

डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक

राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक

विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक

जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406

Email : sewasamwad@gmail.com

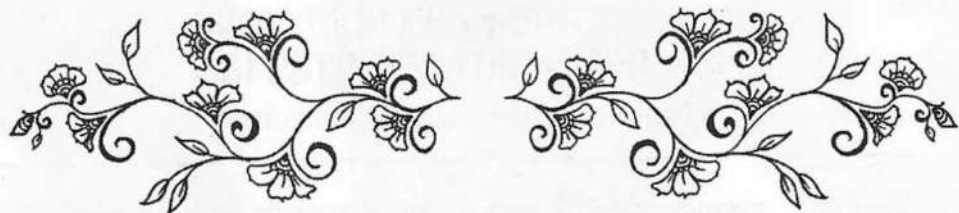
आलोक : प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।



इस अंक में

1. अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2. पुरुषार्थ बिना पानी बचाना मुश्किल	राजेश	6
3. आजादी के आंदोलन में संघ का योगदान	डॉ. मनमोहन वैद्य	7
4. सन्त तुलसी की निष्काम सेवा	डॉ० हरिप्रसाद दुबे	14
5. स्वाधीनता दिवस-पन्द्रह अगस्त	संकलन	16
6. सेवा मानव जीवन का सौंदर्य है	अमित कुमार कुशवाहा	17
7. पर्यावरण	महेन्द्र पाल	18
8. सेवा और समर्पण से संतुष्टि	लीला तिवारी	19
9. मैं कावेरी बोल रही हूँ	अभय मिश्र	20
10. हेलमेट पहनना हमारे हित में	श्याम कुमार	21
11. रक्षा बन्धन (कविता)	विनीता मिश्रा	22
12. गंगा है संस्कृति हमारी (कविता)	महेश चन्द्र त्रिपाठी	24
13. तालाब की परंपराओं को भूलता देश	आर. एस. रमन	25
14. पुण्य आत्मा-सन्त	रोहित मौर्य	26
15. स्वस्थ जीवन के लिये ऋतुचर्या का ज्ञान	स्वास्थ्य	27
16. सरस्वती संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ विद्या भारती सिविकम	समाचार	29
17. प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न विद्या भारती राजस्थान	समाचार	33
18. पानी का महत्व	मुकेश कुमार, ऋषि वर्मा	34
19. सूर्य नमस्कार के 12 आसन व विधियाँ	श्याम बाबू ओझा	35
20. श्री भाऊराव देवरस नामाक्षरी दिग्दर्शन भावोद्गार	रमेश बाबू शर्मा 'व्यस्त'	37
21. पाठकों से निवेदन...		38



भूल सुधार

जुलाई 2019 अंक के पृ.8 पर दूसरे अनुच्छेद, जन्म परिचय में त्रुटिवश 1891 छप गया है इसके स्थान पर 1820 सुधार कर पढ़ें।

धन्यवाद

सम्पादक



अपनी बात



मनुष्य इस सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। उसी के निमित्त परमात्मा ने भांति-भांति के पदार्थों की रचना की है इतना ही नहीं मानव जीवन को सुखमय-शांतिमय तथा वैभवशाली बनाने के लिए वेद आदि शास्त्रों का प्रादुर्भाव हुआ जिसके अनुसार आचरण कर व्यक्ति अच्छे से अच्छा बन सकता है। शास्त्रानुसार जीवन जीने को अथवा न जीने की स्वतन्त्रता मनुष्य को ही प्राप्त है। पुरुषार्थ चतुष्टय, दुखों से निवृत्ति मोक्ष प्राप्त करने के लिए हमारा मार्ग प्रशस्त करता है।

पुरुषार्थ ही मानव जीवन का आधार है। पुरुषार्थहीन मनुष्य न तो जीवन में प्रगति कर सकता है न ही व्यक्तित्व का विकास। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कर्म किए बिना जीवन का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। लक्ष्य विशेष को ध्यान में रखकर दिशा निर्देश में सम्पूर्ण मनोयोग एवं श्रम के साथ किया गया कर्म ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ ही सभी लौकिक-अलौकिक उपलब्धियों का साधन है। पुरुषार्थ ही सुख शान्ति का अधिकारी है पुरुषार्थ ही उज्ज्वल भविष्य का निर्माता एवं भाग्य विधाता है। पुरुषार्थ हीन व्यक्ति ही दुःख, कष्ट एवं अभाव का जीवन जीते हुए पृथ्वी पर भार-स्वरूप बना रहता है।

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन का लक्ष्य ब्राम्हणत्व, देवत्व, ईश्वरत्व एवं पूर्णत्व की प्राप्ति अर्थात् व्यक्तित्व को उच्चतम शिखर तक सर्वांगपूर्ण विकास बताया गया है। मानवीय जीवन के इसी सर्वांगपूर्ण लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय मनीषियों ने चार पुरुषार्थों की व्यवस्था करते हुए जीवन को चार सोपानों में विभाजित किया, जिन्हें पुरुषार्थ चतुष्टय की संज्ञा दी गयी। ये चार पुरुषार्थ हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। चारपाई के चार पायों की तरह ये मानव जीवन के चार स्तम्भ हैं। चार दिशाओं, चार वेदों, चार आश्रमों, चार वर्णों एवं चतुर्मुख ब्रह्मा के चार मुखों की तरह भारतीय संस्कृति में इन चारों पुरुषार्थों का महत्वपूर्ण स्थान है।

धर्म पुरुषार्थ चतुष्टय का प्रथम चरण है जिसका अर्थ है धारण करना। धर्म वह वस्तु है जो समस्त संसार का धारण कर रही है। दूसरे अर्थ में देखें तो जो धारण करने योग्य है वही धर्म है। धर्म की अनेकानेक परिभाषाएँ विद्वानों द्वारा की गयी हैं। मूल्यों के संरक्षण में आस्था को धर्म मानते हैं, अतः धर्म उन मूल्यों एवं सिद्धान्तों का समन्वय है जो हमें एकत्व की तरफ ले जाता है। पं. श्रीराम शर्मा कहते हैं कि धर्म न तो सिद्धान्तों की बकवास है, न मत-मतान्तरों का खण्डन और न ही बौद्धिक सहमति है। इस प्रकार धर्म न तो शब्द है, न नाम और न सम्प्रदाय, वरन् इसका अर्थ होता है आध्यात्मिक अनुभूति। एक ऐसी अनुभूति जिसमें मानव चेतना ऊर्ध्वगामी होकर ईश्वर एवं समस्त सृष्टि के साथ एकत्व की अनुभूति करती है, अतः धर्म समस्त संसार एवं समाज की एकता को मूर्तिमान करने वाला एक सशक्त माध्यम है।

अधिकांश लोग धर्म को कुछ रीति-रिवाजों, प्रथा-परम्पराओं, पूजा-उपासना तक ही सीमित मानते हैं और किसी समुदाय या सम्प्रदाय विशेष को धर्म की संज्ञा देते हैं। वस्तुतः ये सब धर्म का अक्षरज्ञान कराने का माध्यम भर है अमरकोश में धर्म के छह अर्थ बताये गये हैं-पुण्य, आचार, स्वभाव, उपक्रम, उपनिषत् तथा न्यास।

वस्तुतः धर्म से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्म सदाचरण की प्रेरणा देता है और धर्म ही देहपतन के पश्चात् जीव के साथ जाता है। धर्म पर ही सारा संसार टिका है। धर्म से ही भौतिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियाँ मिल सकती हैं। धर्म से समाज में शान्ति एवं सुरक्षा आती है। भारतीय जीवन-पद्धति में धर्म का विशेष स्थान है। धर्म मानवता का मूल है। धर्म कोरा आदर्श नहीं है। धर्म जीवन को सांगोपांग बनाने की प्रक्रिया है। मनुस्मृति के अनुसार धर्म के दस लक्षण हैं-धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य तथा अक्रोध। ये तत्त्व संसार-यात्रा को सार्थक बनाते हैं। धर्मानुकूल आचरण कर अर्थ-(धन) प्राप्ति कर इससे अपनी कामनाओं की पूर्ति करें और फिर मोक्ष प्राप्त कर जीवन को सार्थक बनाएं-अगस्त माह में हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्र भक्त वीर पुरुषों ने जो बलिदान किया है उसे याद कर उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करना तथा सेवा समर्पण के मार्ग पर निरन्तर बढ़ते रहना भी धर्म कार्य है। इन्हीं सद्भावनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

शिव



पुरुषार्थ बिना पानी बचाना मुश्किल



भूजल है तो कल है, बावजूद इसके जल बेवजह बर्बाद किया जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल-संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। हम हमेशा से सुनते आये

हैं भूजल ही जीवन है। जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना नहीं की जा सकती, जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमूल्य संसाधन है जल, या यूँ कहें कि यही सभी सजीवों के जीने का आधार है जल। धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, किन्तु इसमें से 97 प्रतिशत पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3 प्रतिशत है। इसमें भी 2 प्रतिशत पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1 प्रतिशत पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है।

नगरीकरण और औद्योगिकीकरण की तीव्र गति व बढ़ता प्रदूषण तथा जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जाती है, लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे तैसे गर्मी का सीजन निकल जाये बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल संरक्षण के प्रति बेरुखी अपनाये रहते हैं।

आगामी वर्षों में जल संकट की समस्या और अधिक विकराल हो जाएगी, ऐसा मानना है विश्व आर्थिक मंच का, कि दुनियाभर में 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग पानी की कमी की संकटों से जूझ रहे हैं। 22 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व जल दिवस महज औपचारिकता नहीं है, बल्कि जल संरक्षण का संकल्प लेकर अन्य लोगों को इस संदर्भ में जागरुक करने का एक दिन है।

शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता और संबंधित ढेरों समस्याओं को जानने के बावजूद देश की बड़ी आबादी जल संरक्षण के प्रति सचेत नहीं है। जहाँ लोगों को मुश्किल से पानी मिलता है, वहाँ लोग जल की महत्ता को समझ रहे हैं, लेकिन जिसे बिना किसी परेशानी के जल मिल रहा है, वे ही बेपरवाह नजर आ रहे हैं। आज भी शहरों में फर्श चमकाने, गाड़ी धोने और गैर-जरूरी कार्यों में पानी को निर्ममतापूर्वक बहाया जाता है।

प्रदूषित जल में आर्सेनिक, लौहांस आदि की मात्रा अधिक होती है, जिसे पीने से तमाम तरह की स्वास्थ्य संबंधी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में 86 फीसदी से अधिक बीमारियों का कारण असुरक्षित व दूषित पेयजल है। वर्तमान में करीब 1600 जलीय प्रजातियां जल प्रदूषण के कारण लुप्त होने के कगार पर हैं, जबकि विश्व में करीब 1.10 अरब लोग दूषित पेयजल पीने को मजबूर हैं और साफ पानी के बगैर अपना गुजारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति सरकार और आम जनता दोनों के लिए चिंता का विषय है। इस दिशा में अगर त्वरित कदम उठाते हुए सार्थक पहल की जाए तो स्थिति बहुत हद तक नियंत्रण में रखी जा सकती है, अन्यथा अगले कुछ वर्ष हम सबके लिए चुनौतीपूर्ण साबित होंगे।

जल ही जीवन है- जल के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल है।





आजादी के आंदोलन में संघ का योगदान

डॉ. मनमोहन वैद्य

कुछ समय पूर्व एक पत्रकार मिलने आए। बात-बात में उन्होंने पूछा कि स्वतंत्रता आन्दोलन में संघ का सहभाग क्या था? शायद वे भी संघ के खिलाफ चलने वाले असत्य प्रचार के शिकार थे। मैंने उनसे प्रतिप्रश्न किया कि आप स्वतंत्रता आन्दोलन किसको मानते हैं? वे इसके लिए तैयार नहीं थे। कुछ बोल ही नहीं सके। फिर धीरे से शंकित स्वर में उन्होंने कहा, वही जो महात्मा गांधी जी ने किया था। मैंने पूछा क्या लाल, बाल, पाल त्रिमूर्ति का कोई योगदान नहीं था? क्या सुभाष बाबू की कोई भूमिका स्वतंत्रता आन्दोलन में नहीं थी? वे चुप थे। फिर मैंने पूछा कि गांधीजी के नेतृत्व में कितने सत्याग्रह हुए? वे अनजान थे। मैंने कहा कि तीन हुए— 1921, 1930 और 1942। उन्हें जानकारी नहीं थी। मैंने कहा संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने (उनकी मृत्यु 1940 में हुई थी) संघ स्थापना से पहले (1921) और बाद के (1930) सत्याग्रह में भाग लिया था और उन्हें कारावास भी सहना पड़ा।

यह घटना इसलिए कही कि एक योजनाबद्ध तरीके से आधा इतिहास बताने का एक प्रयास चल रहा है। भारत के लोगों को ऐसा मानने के लिए बाध्य किया जा रहा है कि स्वतंत्रता केवल कांग्रेस के और 1942 के सत्याग्रह के कारण मिली है। और किसी ने कुछ नहीं किया। यह बात पूर्ण सत्य नहीं है। गांधी जी ने सत्याग्रह के माध्यम से, चरखा और खादी के माध्यम से सर्व सामान्य जनता को स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागी होने का एक सरल एवं सहज तरीका, साधन उपलब्ध कराया और लाखों की संख्या में लोग स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ सके, यह बात सत्य है। परन्तु सारा श्रेय एक ही आन्दोलन या पार्टी को देना यह इतिहास से

खिलवाड़ है, अन्य सभी के प्रयासों का अपमान है।

अब संघ की बात करनी है तो डॉ. हेडगेवार से ही करनी पड़ेगी। केशव (हेडगेवार) का जन्म 1889 का है। नागपुर में स्वतंत्रता आन्दोलन की चर्चा 1904-1905 से शुरू हुई। उसके पहले अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता आन्दोलन का बहुत वातावरण नहीं था। फिर भी 1897 में रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के हीरक महोत्सव के निमित्त स्कूल में बांटी गई मिटाई 8 साल के केशव ने ना खाकर कूड़े में फेंक दी। यह था उसका अंग्रेजों के गुलाम होने का गुस्सा और चिढ़। 1907 में रिस्ले सेक्युलर नाम से 'वंदे मातरम' के सार्वजनिक उद्घोष पर पाबंदी का जो अन्यायपूर्ण आदेश घोषित हुआ था, उसके विरोध में केशव ने अपने नील सिटी विद्यालय में सरकारी निरीक्षक के सामने अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों द्वारा 'वंदे मातरम' उद्घोष करवा कर विद्यालय के प्रशासन का रोष और उसकी सजा के नाते विद्यालय से निष्कासन भी मोल लिया था। डॉक्टरी पढ़ने के लिए मुंबई में सुविधा होने के बावजूद क्रांतिकारियों का केंद्र होने के नाते उन्होंने कलकत्ता को पसंद किया। वहां वे क्रांतिकारियों की शीर्षस्थ संस्था 'अनुशीलन समिति' के विश्वासपात्र सदस्य बने थे।

सहन नहीं थी क्रांतिकारियों की निंदा

सन् 1921 में जब प्रांतीय कांग्रेस की बैठक में क्रांतिकारियों की निंदा करने वाला प्रस्ताव रखा गया तो डॉ. हेडगेवार ने इसका जबरदस्त विरोध किया, परिणामस्वरूप प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। बैठक की अध्यक्षता लोकमान्य अणे ने की थी। उन्होंने लिखा कि डॉ. हेडगेवार क्रांतिकारियों की निंदा एकदम पसंद नहीं करते थे। वह उन्हें ईमानदार देशभक्त मानते थे। उनका मानना था कि कोई उनके तरीकों से मतभिन्नता रख सकता है,



परंतु उनकी देशभक्ति पर उंगली उठाना अपराध है।

1916 में डॉक्टर बनकर वे नागपुर वापस आए। उस समय स्वतंत्रता आन्दोलन के सभी मूर्धन्य नेता विवाहित थे, गृहस्थ थे। अपनी गृहस्थी के लिए आवश्यक अर्थार्जन का हरेक का कोई न कोई साधन था। इसके साथ-साथ वे स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे थे। डॉक्टर हेडगेवार भी ऐसा ही सोच सकते थे। घर की परिस्थिति भी ऐसी ही थी। परन्तु उन्होंने डॉक्टरी एवं विवाह नहीं करने का निर्णय लिया।

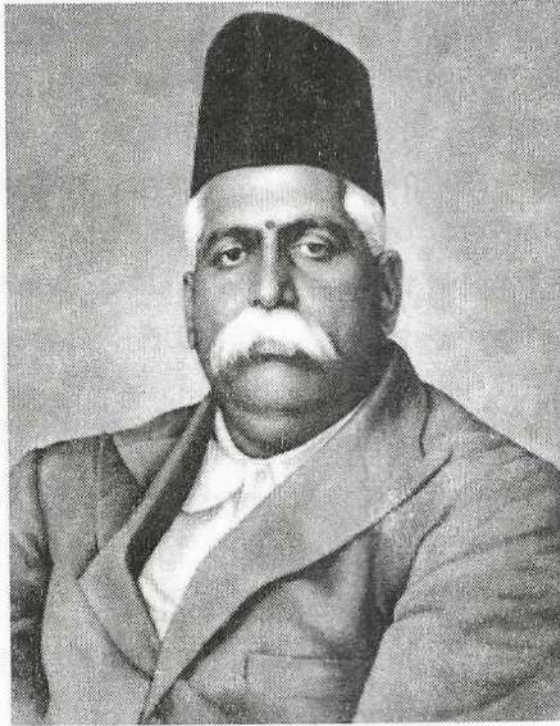
उनके मन में स्वतंत्रता प्राप्ति की इतनी तीव्रता और 'अर्जेंसी' थी कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन का कोई विचार न करते हुए अपनी सारी शक्ति, समय और क्षमता राष्ट्र को अर्पित करते हुए स्वतंत्रता के लिए चलने वाले हर प्रकार के आन्दोलन से अपने आपको जोड़ दिया।

लोकमान्य तिलक पर उनकी अनन्य श्रद्धा थी। तिलक के नेतृत्व में नागपुर में होने जा रहे 1920 के कांग्रेस अधिवेशन की सारी व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी डॉ.

हर्डीकर और डॉ. हेडगेवार को दी गई थी और उसके लिए उन्होंने 1,200 स्वयंसेवकों की भर्ती करवाई थी। उस समय डॉ. हेडगेवार कांग्रेस की नागपुर शहर इकाई के संयुक्त सचिव थे। उस अधिवेशन में पारित करने हेतु कांग्रेस की प्रस्ताव समिति के सामने डॉ. हेडगेवार ने ऐसे प्रस्ताव का सुझाव रखा था कि कांग्रेस का उद्देश्य भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर भारतीय गणतंत्र की स्थापना करना और विश्व को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त करना होना चाहिए। सम्पूर्ण स्वातंत्र्य का उनका सुझाव कांग्रेस ने 9 वर्ष बाद 1929 के लाहौर अधिवेशन में स्वीकृत

किया। इससे आनंदित होकर डॉक्टर जी ने संघ की सभी शाखाओं में (संघ कार्य 1925 में प्रारंभ हो चुका था) 26 जनवरी, 1930 को कांग्रेस का अभिनंदन करने की सूचना दी थी। नागपुर तिलकवादियों का गढ़ था। 1 अगस्त, 1920 को लोकमान्य तिलक के देहावसान के कारण नागपुर के सभी तिलकवादियों में निराशा छा गई। बाद में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस का स्वतंत्रता आन्दोलन चला।

असहयोग आन्दोलन के समय, 1921 में, साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन के सामाजिक आधार को व्यापक करने की दृष्टि से, अंग्रेजों द्वारा तुर्कस्तान में खिलाफत को निरस्त करने से आहत मुस्लिम मन को अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ जोड़ने के उद्देश्य से महात्मा गांधी ने खिलाफत का समर्थन किया। इस पर कांग्रेस के अनेक नेता तथा राष्ट्रवादी मुस्लिमों को आपत्ति थी। इसलिए, तिलकवादियों का गढ़ होने के कारण नागपुर में असहयोग आन्दोलन बहुत प्रभावी नहीं रहा। परन्तु डॉ. हेडगेवार, डॉ. चोलकर,



समिमुल्ला खान आदि ने यह परिवेश बदल दिया। उन्होंने खिलाफत को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने पर आपत्ति होते हुए भी उसे सार्वजनिक नहीं किया। इसी मापदंड के आधार पर साम्राज्यवाद का विरोध करने के लिए उन्होंने तन-मन-धन से आन्दोलन में सहभाग लिया। व्यक्तिगत सामाजिक संबंधों से अलग हटकर उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थिति का विश्लेषण किया और आसपास के राजनीतिक वातावरण एवं दबंग तिलकवादियों के दृष्टिकोण की चिंता नहीं की। उन पर चले राजद्रोह के मुकदमे में उन्हें एक वर्ष का कारावास सहना पड़ा। वे 19



अगस्त, 1921 से 11 जुलाई, 1922 तक कारावास में रहे। वहां से छूटने के बाद 12 जुलाई को उनके सम्मान में नागपुर में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ था। समारोह में प्रांतीय नेताओं के साथ-साथ कांग्रेस के अन्य राष्ट्रीय नेता हकीम अजमल खां, पंडित मोतीलाल नेहरू, राजगोपालाचारी, डॉ. अंसारी, विठ्ठल भाई पटेल आदि डॉ. हेडगेवार का स्वागत करने के लिए उपस्थित थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति का महत्व तथा प्राथमिकता को समझते हुए भी एक प्रश्न डॉ. हेडगेवार को सतत सताता रहता था कि, 7000 मील से दूर व्यापार करने आए मुट्टी भर अंग्रेज, इस विशाल देश पर राज कैसे करने लगे? जरूर हममें कुछ दोष होंगे। उनके ध्यान में आया कि हमारा समाज आत्म-विस्मृत, जाति प्रान्त-भाषा-उपासना पद्धति आदि अनेक गुटों में बंटा हुआ, असंगठित और अनेक कुरीतियों से भरा पड़ा है जिसका लाभ लेकर अंग्रेज यहां राज कर सके। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी समाज ऐसा ही रहा तो कल फिर इतिहास दोहराया जाएगा। वे कहते थे कि 'नागनाथ जाएगा तो सांपनाथ आएगा'। इसलिए इस अपने राष्ट्रीय समाज को आत्मगौरव युक्त, जागृत, संगठित करते हुए सभी दोष, कुरीतियों से मुक्त करना और राष्ट्रीय गुणों से युक्त करना अधिक मूलभूत आवश्यक कार्य है और यह कार्य राजनीति से अलग, प्रसिद्धि से दूर, मौन रहकर सातत्यपूर्वक करने का है, ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ। उस हेतु 1925 में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। संघ स्थापना के पश्चात् भी सभी राजनीतिक या सामाजिक नेताओं, आन्दोलन एवं गतिविधि के साथ उनके समान नजदीकी के और आत्मीय संबंध थे।

1930 में गांधी के आह्वान पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन 6 अप्रैल को दांडी (गुजरात) में नमक सत्याग्रह के नाम से शुरू हुआ। नवम्बर 1929 में ही संघचालकों की त्रिदिवसीय बैठक में इस आन्दोलन को बिना शर्त समर्थन करने का निर्णय संघ में हुआ

था। संघ की नीति के अनुसार डॉ. हेडगेवार ने व्यक्तिगत तौर पर अन्य स्वयंसेवकों के साथ इस सत्याग्रह में भाग लेने का निर्णय लिया। और संघ कार्य अविरत चलता रहे इस हेतु उन्होंने सरसंघचालक पद का दायित्व अपने पुराने मित्र डॉ. परांजपे को सौंप कर बाबासाहब आप्टे और बापू राव भेदी को शाखाओं के प्रवास की जिम्मेदारी दी। इस सत्याग्रह में उनके साथ प्रारंभ में 21 जुलाई, को 3-4 हजार लोग थे। वर्धा, यवतमाल होकर पुसद पहुंचते-पहुंचते सत्याग्रह स्थल पर 10,000 लोग इकट्ठे हुए। इस सत्याग्रह में उन्हें 9 महीने का कारावास हुआ। वहां से छूटने के पश्चात् सरसंघचालक का दायित्व पुनः स्वीकार कर वे फिर से संघ कार्य में जुट गए।

1938 में भागानगर (हैदराबाद) में निजाम के द्वारा हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचार के खिलाफ हिन्दू महासभा और आर्य समाज के तत्वावधान में 'भागानगर निःशस्त्र प्रतिकार मंडल' के नाम से सत्याग्रह का आह्वान हुआ उसमें सहभागी होने के लिए जिन स्वयंसेवकों ने अनुमति मांगी उन्हें डॉक्टर ने सहर्ष अनुमति दी। जिन पर केवल संघ का प्रमुख दायित्व था उन्हें केवल संगठन के कार्य की दृष्टि से बाहर ही रहने के लिए कहा था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि सत्याग्रह में जिन्हें भाग लेना है वे व्यक्ति के नाते अवश्य भाग ले सकते हैं। भागानगर सत्याग्रह के संचालकों के द्वारा प्रसिद्धि पत्रक में 'संघ' ने सहभाग लिया, ऐसा बार-बार आने पर डॉक्टर ने उन्हें पत्र लिखकर संघ का उल्लेख न करने की सूचना उनके प्रसिद्धि विभाग को देने को कहा था।

राजकीय आन्दोलन का तात्कालिक, नैमित्तिक व संघर्षमय स्वरूप और संघ का नित्य, अविरत (अखंड) व रचनात्मक स्वरूप इन दोनों की भिन्नता को समझ कर आन्दोलन भी यशस्वी हो, परन्तु उस समय भी चिरंतन संघकार्य अबाधित रहे इस दूरदृष्टि से विचारपूर्वक यह नीति डॉक्टर ने अपनाई थी। इसीलिए जंगल सत्याग्रह के समय भी सरसंघचालक का दायित्व डॉ. परांजपे को सौंप कर



व्यक्ति के नाते वे अनेक स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह में सहभागी हुए थे।

8 अगस्त, 1942 को मुंबई के गोवलिया टैंक मैदान पर कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधीजी ने 'अंग्रेज! भारत छोड़ो' यह ऐतिहासिक घोषणा की। दूसरे दिन से ही देश में आन्दोलन ने गति पकड़ी और जगह जगह आन्दोलन के नेताओं की गिरफ्तारी शुरू हुई।

विदर्भ में बावली (अमरावती), आष्टी (वर्धा) और चिमूर (चंद्रपुर) में विशेष आन्दोलन हुए। चिमूर के समाचार बर्लिन रेडियो पर भी प्रसारित हुए। यहां के आन्दोलन का नेतृत्व कांग्रेस के उद्धवराव कोरेकर और संघ के अधिकारी दादा नाईक, बाबूराव बेगडे, अण्णाजी सिरास ने किया। इस आन्दोलन में अंग्रेज की गोली से एकमात्र मृत्यु बालाजी रायपुरकर इस संघ स्वयंसेवक की हुई। कांग्रेस, श्री तुकडो महाराज द्वारा स्थापित श्री गुरुदेव सेवा मंडल एवं संघ स्वयंसेवकों ने मिलकर 1943 का चिमूर का आन्दोलन और सत्याग्रह किया। इस संघर्ष में 125 सत्याग्रहियों पर मुकदमा चला और असंख्य स्वयंसेवकों को कारावास में रखा गया।

भारतभर में चले इस आन्दोलन में स्थान-स्थान पर संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता, प्रचारक स्वयंप्रेरणा से कूद पड़े। अपने जिन कार्यकर्ताओं ने स्थान-स्थान पर अन्य स्वयंसेवकों को साथ लेकर इस आन्दोलन में भाग लिया उनके कुछ नाम इस प्रकार हैं— राजस्थान में प्रचारक जयदेवजी पाठक, जो बाद में विद्या भारती में सक्रिय रहे। आर्वी (विदर्भ) में डॉ. अण्णासाहब देशपांडे। जशपुर (छत्तीसगढ़) में रमाकांत केशव (बालासाहब) देशपांडे, जिन्होंने बाद में वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना की। दिल्ली में श्री वसंतराव ओक जो बाद में दिल्ली के प्रान्त प्रचारक रहे। बिहार (पटना), में वहां के प्रसिद्ध वकील कृष्ण वल्लभप्रसाद नारायण सिंह (बबुआजी) जो बाद में बिहार के संघचालक रहे। दिल्ली में ही श्री चंद्रकांत भारद्वाज,

जिनके पैर में गोली धंसी और जिसे निकाला नहीं जा सका। बाद में वे प्रसिद्ध कवि और अनेक संघ गीतों के रचनाकार हुए। पूर्वी उत्तर प्रदेश में माधवराव देवड़े जो बाद में प्रान्त प्रचारक बने और इसी तरह उज्जैन (मध्य प्रदेश) में दत्तात्रेय गंगाधर (भैयाजी) कस्तूरे का अवदान है जो बाद में संघ प्रचारक हुए। अंग्रेजों के दमन के साथ-साथ एक तरफ सत्याग्रह चल रहा था तो दूसरी तरफ अनेक आंदोलनकर्ता भूमिगत रहकर आन्दोलन को गति और दिशा देने का कार्य कर रहे थे। ऐसे समय भूमिगत कार्यकर्ताओं को अपने घर में पनाह देना किसी खतरे से खाली नहीं था।

1942 के आन्दोलन के समय भूमिगत आन्दोलनकर्ता अरुणा आसफ अली दिल्ली के प्रान्त संघचालक लाला हंसराज गुप्त के घर रही थीं और महाराष्ट्र में सतारा के उग्र आन्दोलनकर्ता नाना पाटील को भूमिगत स्थिति में औंध के संघचालक पंडित सातवलेकर ने अपने घर में आश्रय दिया था। ऐसे असंख्य नाम और हो सकते हैं। उस समय इन सारी बातों का दस्तावेजीकरण (रिकार्ड) करने की कल्पना भी संभव नहीं थी।

डॉ. हेडगेवार के जीवन का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि बाल्यकाल से आखिरी सांस तक उनका जीवन केवल और केवल अपने देश और उसकी स्वतंत्रता इसके लिए ही था। उस हेतु उन्होंने समाज को दोषमुक्त, गुणवान एवं राष्ट्रीय विचारों से जाग्रत कर उसे संगठित करने का मार्ग चुना था। संघ की प्रतिज्ञा में भी 1947 तक संघ कार्य का उद्देश्य 'हिन्दू राष्ट्र को स्वतंत्र करने के लिए' ऐसा ही था।

हेडगेवार दृष्टि—संघ दृष्टि

भारतीय राष्ट्र जीवन में 'एक्सट्रीम पोजीशंस' लेने की स्थिति दिखती थी। डॉक्टर जी के समय भी समाज कांग्रेस—क्रांतिकारी, तिलक—गांधी, हिंसा—अहिंसा, हिन्दू महासभा—कांग्रेस ऐसे द्वन्द्वों में उलझा हुआ था। एक दूसरे को मात करने का वातावरण बना था। कई बार तो आपसी भेद के



चलते ऐसा बेसिर का विरोध करने लगते थे कि साम्राज्यवाद के विरोध में अंग्रेजों से लड़ने के बदले आपस में ही भिड़ते दिखते थे। 1921 में मध्य प्रान्त कांग्रेस की प्रांतीय बैठक में लोकनायक अणे की अध्यक्षता में क्रांतिकारियों की निंदा का प्रस्ताव आने वाला था। डॉ. हेडगेवार ने उन्हें समझाया कि क्रांतिकारियों के मार्ग पर आपका विश्वास भले ही ना हो पर उनकी देशभक्ति पर शंका नहीं करनी चाहिए। ऐसी स्थिति में डॉ. जी का जीवन राजनीतिक दृष्टिकोण, दर्शन एवं नीतियां, तिलक-गांधी, हिंसा-अहिंसा, कांग्रेस-क्रांतिकारी, इन संकीर्ण विकल्पों के आधार पर निर्धारित नहीं थी। व्यक्ति अथवा विशिष्ट मार्ग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्वातंत्र्य प्राप्ति का मूल ध्येय था।

भारत को केवल राजनीतिक इकाई मानने वाला एक वर्ग हर प्रकार के श्रेय को अपने ही पल्ले में डालने पर उतारू दिखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए दूसरों ने कुछ नहीं किया, सारा का सारा श्रेय हमारा ही है ऐसा ('प्रोपगंडा') एकतरफा प्रचार करने पर वह आमादा दिखता है। यह उचित नहीं है। सशस्त्र क्रांति से लेकर अहिंसक सत्याग्रह, सेना में विद्रोह, आजाद की हिन्द फौज इन सभी के प्रयासों का एकत्र परिणाम स्वतंत्रता प्राप्ति में हुआ है। इसमें द्वितीय महायुद्ध में जीतने के बाद भी इंग्लैंड की खराब हालत और अपने सभी उपनिवेशों पर शासन करने की असमर्थता और अनिच्छा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। स्वतंत्रता के लिए भारत के समान दीर्घ संघर्ष नहीं हुआ, ऐसे उपनिवेशों को भी अंग्रेजों ने क्रमशः स्वतंत्र किया है।

1942 का सत्याग्रह, महात्मा गांधी द्वारा किया हुआ आखिरी सत्याग्रह था और उसके पश्चात् 1947 में देश स्वतंत्र हुआ, यह बात सत्य है। परन्तु इसलिए स्वतंत्रता केवल 1942 के आन्दोलन के कारण ही मिली, और जो लोग उस आन्दोलन में कारावास में रहे उनके ही प्रयास से भारत स्वतंत्र हुआ यह कहना हास्यास्पद, अनुचित और असत्य है।

एक रूपक कथा है। एक किसान को बहुत भूख लगी। पत्नी खाना परोस रही थी और वह खाए जा रहा था। पर तृप्ति नहीं हो रही थी, दस रोटी खाने के बाद जब उसने ग्यारहवीं रोटी खाई तो उसे तृप्ति की अनुभूति हुई। उससे नाराज होकर वह पत्नी को डांटने लगा कि यह ग्यारहवीं रोटी जिससे तृप्ति हुई, उसने पहले क्यों नहीं दी। इतनी सारी रोटियां खाने की मेहनत बच जाती और तृप्ति जल्दी अनुभूत होती। यह कहना हास्यास्पद ही है।

इसी तरह यह कहना कि केवल 1942 के आन्दोलन के कारण ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, हास्यास्पद बात है। इसके बारे में अन्य इतिहासकार क्या कहते हैं जरा देखिए—

भारत को आजाद करते समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने कहा था, "महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलन का ब्रिटिश सरकार पर असर शून्य रहा है।" कोलकाता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और पश्चिम बंगाल के कार्यकारी गवर्नर रहे पी एम चक्रवर्ती के शब्दों में, "जिन दिनों मैं कार्यकारी गवर्नर था, उन दिनों भारत दौरे पर आए लॉर्ड एटली, जिन्होंने अंग्रेजों को भारत से बाहर कर कोई औपचारिक आजादी नहीं दी थी, दो दिन के लिए गवर्नर निवास पर रुके थे। भारत से अंग्रेजी हुकूमत के चले जाने के असली कारणों पर मेरी उनके साथ लंबी बातचीत हुई थी। मैंने उनसे सीधा प्रश्न किया था कि चूंकि गांधी जी का 'भारत छोड़ो आंदोलन' तब तक हल्का पड़ चुका था और 1947 के दौरान अंग्रेजों को यहां से आनन-फानन में चले जाने की कोई मजबूरी भी नहीं थी, तब वह क्यों गए? इसके जवाब में एटली ने कई कारण गिनाए, जिनमें से सबसे प्रमुख था भारतीय सेना और नौसेना की ब्रिटिश राज के प्रति वफादारी का लगातार कम होते जाना। इसका मुख्य कारण नेताजी सुभाषचंद्र बोस की सैन्य गतिविधियां थीं। हमारी बातचीत के अंत में मैंने एटली से पूछा कि अंग्रेजी सरकार के भारत छोड़ जाने में गांधी जी का



कितना असर था। सवाल सुनकर एटली के हॉट व्यंग्यमिश्रित मुस्कान के साथ मुड़े और वह धीमे से बोले — न्यूनतम (मिनिमम)। “(रंजन बोरा, ‘सुभाषचंद्र बोस, द इंडियन नेशनल आर्मी, द वार ऑफ इंडियाज लिबरेशन’। जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल रिव्यू, खंड 20, (2001), सं 1, संदर्भ 46) अपनी पुस्तक ‘द इंडियाज स्ट्रगल’ में नेताजी ने लिखा है, “और महात्मा जी को स्वयं अपने द्वारा प्रतिपादित योजना के प्रति स्पष्टता नहीं थी और भारत को उसकी स्वतंत्रता के अमूल्य लक्ष्य तक ले जाने से जुड़े अभियान के क्रमबद्ध चरणों से संबंधित कोई साफ विचार भी नहीं था।”

रमेश चंद्र मजूमदार कहते हैं, “और यह तीनों का एकजुट असर था जिसने भारत को आजाद कराया। इसमें भी विशेष रूप से आईएनए मुकदमे के दौरान सामने आए तथ्य और इस कारण भारत में उठी प्रतिक्रिया, जिसके कारण पहले से ही युद्ध में टूट चुकी ब्रिटिश सरकार को साफ हो गया था कि वह भारत पर शासन करने के लिए सिपाहियों की वफादारी पर निर्भर नहीं रह सकती। भारत से जाने के उनके निर्णय का यह संभवतः सबसे बड़ा कारण था।” (मजूमदार, रमेश चंद्र, — श्री फेजेज ऑफ इंडियाज स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, बीवीएन बॉम्बे, इंडिया 1967, पृ 58-59)

यह सारा वृत्तांत पढ़ने के बाद, यह सोचना कि 1942 के ‘भारत छोड़ो’ आन्दोलन का स्वतंत्रता प्राप्ति में कुछ भी योगदान नहीं है यह असत्य है। जेल में जाना यही देशभक्त होने का परिचायक है ऐसा मानना भी ठीक नहीं है। स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय लोगों में, आन्दोलन कर कारावास भोगने वाले, उनके परिवारों की देखभाल करने वाले, भूमिगत आन्दोलन करने वाले, ऐसे भूमिगत आन्दोलनकारियों को अपने घरों में पनाह देने वाले, विद्यालयों के द्वारा विद्यार्थियों में देशभक्ति का भाव जगाने वाले, स्वदेशी के द्वारा अंग्रेजों की आर्थिक

नाकाबंदी करने वाले, स्वदेशी उद्योग के माध्यम से सशक्त भारतीय पर्याय देने वाले, लोककला, पत्रकारिता, कथा उपन्यास, नाटकादि के माध्यम से राष्ट्र जागरण करने वाले सभी का योगदान महत्व का है।

भारत केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं है। यह तो हजारों वर्षों के चिंतन के आधार पर निर्मित एक शाश्वत, समग्र, एकात्म जीवन दृष्टि पर आधारित एक सांस्कृतिक इकाई है। यह जीवन दृष्टि, संस्कृति ही आसेतु हिमाचल इस वैविध्यपूर्ण समाज को एकसूत्र में गूँथकर एक विशिष्ट पहचान देती है। इसलिए, भारत के इतिहास में जब-जब सफल राजनीतिक परिवर्तन हुआ है, उसके पहले और उसके साथ-साथ एक सांस्कृतिक जागरण भारत की आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा हुआ दिखता है। परिस्थिति जितनी अधिक विकट होती दिखती है उतनी ही ताकत के साथ यह आध्यात्मिक शक्ति भी भारत में सक्रिय हुई है, ऐसा दिखता है। इसीलिए मुगलों के शासन के साथ 12वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी तक सारे भारत में एक साथ भक्ति आन्दोलन प्रस्फुटित हुआ दिखता है। उत्तर में स्वामी रामानन्द से लेकर सुदूर दक्षिण में रामानुजाचार्य तक प्रत्येक प्रदेश में साधु, संत, संन्यासी ऐसे आध्यात्मिक महापुरुषों की एक अखंड परंपरा चल पड़ी है ऐसा दिखता है। अंग्रेजों की गुलामी के साथ-साथ स्वामी दयानंद सरस्वती, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद जैसे आध्यात्मिक नेतृत्व की परंपरा चल पड़ी दिखती है। भारत के इतिहास में सांस्कृतिक जागरण के बिना कोई भी राजनीतिक परिवर्तन सफल और स्थाई नहीं हुआ है। इसलिए सांस्कृतिक जागरण के कार्य का मूल्यांकन राजनीति के मापदंड से नहीं होना चाहिए। मौन, शांत रीति से सतत चलने वाले आध्यात्मिक, सांस्कृतिक जागरण का महत्व भारत जैसे देश के लिए अधिक मायने रखता है, यह



भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन
1 अप्रैल 2019 से 30 जून 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह अप्रैल 2019 में लाभान्वित रोगी	माह जून 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	77	39	116
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	271	187	458
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	170	48	218
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	94	56	150
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	40	48	88
कुल लाभान्वित रोगी			652	378	1030

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	1138	644	1782
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	893	416	1309
कुल लाभान्वित रोगी संख्या			2031	1060	3091

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	647	380	1027
----	-------------	--------------------	-----	-----	------

1 अप्रैल 2019 से 30 जून 2019 तक कुल लाभान्वित रोगी सं. 5148

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह मई 2019 में	माह जून 2019 में	योग सत्र 19-20
1.	उत्तर प्रदेश	11300	5340	16640
2.	उत्तराखण्ड	114	48	162
3.	बिहार	7951	3864	11815
4.	झारखण्ड	1224	687	1911
5.	उड़ीसा	140	63	203
6.	मध्य प्रदेश	338	300	638
7.	छत्तीसगढ़	55	59	114
8.	राजस्थान/गुजरात	00	00	00
9.	महाराष्ट्र	00	00	00
10.	नेपाल	121	10	131
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	00	00	00
12.	पश्चिम बंगाल	182	160	342
13.	अन्य प्रान्त	125	62	187
योग		21550	10595	32143

अन्त्योदय हेल्थ मिशन, नेत्र कुम्भ चिकित्सालय, सी-136, निराला नगर, लखनऊ
1 अप्रैल 2019 से जून 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

	माह अप्रैल 2019 में	माह जून 2019 में	योग सत्र 19-20
नेत्र परीक्षण	589	333	922
चश्मा वितरण	345	202	547



सन्त तुलसी की निष्काम सेवा

डॉ० हरिप्रसाद दुबे

सन्तों के जीवन-चरित्र से सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। साधना है। महाकवि तुलसीदास निष्काम सेवा करने वाली विभूतियों में से एक हैं। पीड़ित मानवता की सेवा करने के लिए उनके अखण्ड व्रत ने उन्हें विश्व कवि की ऊंचाई प्रदान की। सेवा और त्याग का भाव राष्ट्रीय आदर्श उत्पन्न करता है। सादा जीवन उच्च विचार समाज सेवा का एक ऐसा मार्ग है जिससे मानवता की सच्ची सेवा सम्भव है। साहित्य सेवा द्वारा तुलसी ने समाज में जो चेतना फैलाई वह सूक्ति बनकर जनमानस में व्याप्त है। सत्य का आचरण बढ़ाने वाला आदर्श चरित्र भारतीयता का प्राण है। यही सेवा की उद्गम भूमि है।

तुलसी की जन्मजात तेजस्विता सेवा और मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत रही। आचरण में रहने वाली विलक्षण सेवा का अद्भूत तत्व निरन्तर वाणी के रूप में प्रभाव डालता है। सेवा जीवन में सकारात्मक चिन्तन धारण कराकर ऊंचाई प्रदान करती है।

तुलसी ने अपनी रचनाओं में शबरी, जटायु हनुमान, निषादराज भरत लक्ष्मण के चरित्र में परम गहन सेवाधर्म का समावेश किया है। उच्चकोटि की सेवाभावना सौंदर्य का शिखर देती है। जीवन का सौन्दर्य सेवा है। सेवा महानता का पर्याय है। सेवा चरित्र की ऐसी दिव्य पूंजी है जो आचरण से तपायी जाती है।

श्रावण मास की शुक्ल सप्तमी को महाकवि तुलसी दास का जन्म हुआ। गोस्वामी तुलसीदास अपनी रचनाओं को माता-पिता कहने वाले विश्व के प्रथम सन्त कवि हैं। इनका बाल्यकाल विपरीत

परिस्थितियों के कारण पत्थर हृदय को भी पिघला देता है। माता की मृत्यु और पिता द्वारा अमंगलकारी समझकर त्याग दिए जाने पर नवजात तुलसी दासी चुनियां पर निर्भर रहे। उसके साथ छोड़ने पर अनाथ तुलसी को भूख के लिए घर-घर भटकना पड़ा। अशुभ मानकर लोग अपना द्वार बन्द कर लेते। शिवालय की देहरी पर सिर रखकर प्रायः भूखे ही सो जाते। परवतिया उनकी पालन हार बनीं। संघर्ष ने अस्तित्व बचाया।

जिसका कोई नहीं होता उसका ईश्वर होता है। एक दिन स्वामी नरहरिदास गांव में आये। बालक तुलसी ने महात्मा का चरण स्पर्श किया तो

लोगों ने डांट दिया। तुलसी दूर खड़े हो गये। महात्मा ने पूंछा—वह लड़का कौन है? लोगों ने कहा—यह पं० आत्माराम दूबे का अभागगा मुरहा पुत्र है। इसे जो प्यार करता है उसका अनिष्ट हो जाता है। स्वामी जी की भौंहें चढ़ गई कि एक बालक पेट की भूख शांत करने के



लिए भटक रहा है। अभी इसका संस्कार नहीं हुआ। लोग कैसा अन्धविश्वास फैला रहे हैं? स्वामी जी तुलसी को अपने साथ ले गये। यह भेंट ईश्वरीय वरदान सिद्ध हो गयी। जिसके जन्म के समय मंगलगीत सोहर नहीं गाये गये, उसी तुलसी की रचना का सरस्वती की कृपा से सम्पूर्ण विश्व गान कर रहा है।

कवि तुलसी ने रामकथा को आदर्श जीवन का मार्ग दिखाने का माध्यम बनाया। भरत के त्याग का सन्देश दिया। अपने आचरण को सर्वोपरि मर्यादित जीवन करने का उपाय बताया। उनकी कविता का



उद्देश्य गंगा की तरह सबके लिए हितकर है। तुलसी के राम सब में रमते हैं। नैतिकता, मानवता, कर्म, त्याग द्वारा लोकमंगल की स्थापना करने का प्रयास किया। मनुष्य के संस्कार की कथा लिखकर तुलसी ने राम को लोकनायक बनाया। रामचरितमानस के अलावा कविता वाली, दोहावली, हनुमान वाहुक, पार्वती मंगल रामलला नहहू आदि अनेक कृतियां रचीं। अनेक चौपाइयां सूक्ति बन गयी हैं। सीता, वशिष्ठ, भरत, हनुमान, भरत, शबरी, केवट जीवन के अध्याय बने हैं। काशी में मेधा भगत

के साथ रामलीला करने वाले तुलसी की चित्रकूट में रहीम से मित्रता हुई। राम की वंदना के स्वर— मंगल भवन अमंगल हारी सर्वत्रव्याप्त हैं। अयोध्या—सरयू, प्रयागराज—गंगा, चित्रकूट — मंदाकिनी, कामदगिरि का सुन्दर चित्रण करके तुलसी ने जीवन को विश्वास से जोड़ा।

मन वचन, कर्म की त्रिवेणी में तुलसीदास सेवा के परम धर्म को अपनी कृतियों में समाहित करके मानवता का उपकार किया है। अपनी निष्काम सेवा से तुलसी विश्ववन्द्य बन गए।



व्रत-त्यौहार अगस्त 2019

दिनांक	दिन	व्रत-त्यौहार
01	गुरुवार	स्नान—श्राद्ध की अमावस्या
02	शुक्रवार	चन्द्रदर्शन, स्वा. करपात्री जयंती
03	शनिवार	हरियाली तीज व्रत, श्लेषा के सूर्य
04	रविवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत
05	सोमवार	नागपंचमी, श्रावण सोमवार व्रत
06	मंगलवार	भौम व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमदर्शन
07	बुधवार	शीतला सप्तमी व्रत, गोस्वामी तुलसीदास जयंती
11	रविवार	पुत्रदा एकादशी व्रत
12	सोमवार	सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, श्रावण द्वादशी, मु. बकरीद
13	मंगलवार	भौम व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमदर्शन
14	बुधवार	व्रत की पूर्णिमा, हयग्रीव उत्पत्ति
15	गुरुवार	स्नान—दान पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, संस्कृति दिवस, स्वतन्त्रता दिवस
17	शनिवार	रजतग्गा, भीमचंडी—विन्ध्याचल देवी प्राकट्यो, मघा सिंह संक्राति
18	रविवार	कजरी तीज व्रत, सतुआ तीज
19	सोमवार	संकष्टी बहुला गणेश चौथ व्रत
21	बुधवार	हलषष्ठी व्रत, ललही छठ व्रत
23	शुक्रवार	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत सबका, गोकुलाष्टमी
24	शनिवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
26	सोमवार	जया एकादशी व्रत, अघोर द्वादशी
28	बुधवार	प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत
30	शनिवार	स्नान—दान—श्राद्ध अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या
31	रविवार	चन्द्रदर्शन



स्वाधीनता दिवस-पन्द्रह अगस्त

हमारे राष्ट्रीय त्योहारों में स्वाधीनता दिवस पन्द्रह अगस्त का विशेष महत्त्व है। इसका महत्त्व सभी राष्ट्रीय त्योहारों में इसलिए सर्वाधिक है कि इसी दिन हमें शताब्दियों—शताब्दियों की गुलामी की वेणी से मुक्ति मिली थी। इसी दिन हमने आजाद होकर अपने समाज और राष्ट्र को सम्भाला था। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि हम इसी दिन आजाद हुए थे। सन् 1947 को 15 अगस्त के दिन जिस अंग्रेजी राज्य का कभी भी सूरज नहीं डूबता था, उसी ने हमें हमारा देश सौंप दिया। हम क्यों और कैसे स्वतंत्र हुए, इसका एक विस्तृत इतिहास है। इस देश की आजादी के लिए बार-बार देशभक्तों ने अपने प्राणों की बाजी लगाने में तनिक देर नहीं की। हमें अपने स्वतन्त्रा के इतिहास को अवश्य जानना चाहिए।

स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर दुकानों और राजमार्गों की शोभा बहुत बढ़ जाती है। जगह-जगह सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जिससे अत्यन्त प्रसन्नता का सुखद वातावरण फैल जाता है। सभी प्रकार से खुशियों की ही तरंगें उठती-बढ़ती दिखाई देती हैं।

स्वाधीनता दिवस के शुभावसर पर चारों ओर सब में एक विचित्र स्फूर्ति और चेतना का उदय हो जाता है। राष्ट्रीय विचारों वाले व्यक्ति इस दिन अपनी किसी वस्तु या संस्थान का उद्घाटन कराना बहुत सुखद और शुभदायक मानते हैं। विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन और संचालन देखने-सुनने को मिलता है।

प्रातःकाल सभी विद्यालयों में राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाता है और 'जन गण मन अधिनायक जय हे भारत-भाग्य विधाता' राष्ट्रीय गान गाया जाता है। बाल-सभाओं में मिष्ठान वितरण भी किया जाता है।

ग्रामीण अंचलों में भी इस राष्ट्रीय पर्व की रूप-रेखा की झलक बहुत ही आकर्षक होती है। सभी प्रबुद्ध और जागरूक नागरिक इस पर्व को खूब उत्साह और उल्लास के साथ मनाते हैं। बच्चे तो इस दिन बहुत ही प्रसन्न होते हैं। वे इसे भी

खाने-पीने और खुशी मनाने का दिन समझते हैं।

हमें चाहिए कि इस पावन और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार के शुभावसर पर अपने राष्ट्र के अमर शहीदों के प्रति हार्दिक श्रद्धा भाव को प्रकट करते हुए—उनकी नीतियों और सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारने का सत्संकल्प लेकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में कदम उठाएं। इससे हमारे राष्ट्र की स्वाधीनता निरन्तर सुदृढ़ रूप में लौह-स्तम्भ सी अडिग और शक्तिशाली बनी रहेगी।

राष्ट्रीय स्तर पर इस पर्व का मुख्य आयोजन दिल्ली के लाल किले में होता है। इस समारोह को देखने के लिए भारी जनसमूह उमड़ पड़ता है। लाल किला मैदान व सड़कें जनता से खचाखच भरी होती हैं। यहां प्रधानमंत्री के आगमन के साथ ही समारोह का शुभारम्भ हो जाता है।

सेना के तीनों अंगों जल, थल और नौसेना की टुकड़ियां तथा एन.सी.सी. के कैडिट सलामी देकर प्रधानमंत्री का स्वागत करते हैं। प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर पर बने मंच पर पहुंच कर जनता का अभिनन्दन स्वीकार करते हैं और राष्ट्रीय ध्वज लहराते हैं। ध्वजारोहण के समय राष्ट्र ध्वज को सेना द्वारा इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है।

इसके बाद प्रधानमंत्री राष्ट्र की जनता को बधाई देने के बाद देश की भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही पिछले वर्ष पन्द्रह अगस्त से इस वर्ष तक की काल में घटित प्रमुख घटनाओं पर चर्चा करते हैं। भाषण के अंत में तीन बार वे जय हिन्द का घोष करते हैं। जिसे वहां उपस्थित जनसमूह बुलन्द आवाज में दोहराता है। लाल किले पर इस अवसर पर रोशनी की जाती है।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर : स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर अर्थात् 14 अगस्त की रात्रि को हमारे राष्ट्रपति महोदय का देश के नाम संदेश प्रसारित करते हैं जिसको संचार माध्यमों से सर्वत्र प्रसारित किया जाता है। अपने संदेश में वह सरकार की उपलब्धियों व भावी जन-आशाओं व आकांक्षाओं पर प्रकाश डालते हैं। हम सभी अपने राष्ट्र पर गौरव करते हैं।



सेवा मानव जीवन का सौंदर्य है

अमित कुमार कुशवाहा

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था—श्लोक में श्रेष्ठ धर्म क्या है ? इसके उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा था— 'समाज और संसार में दया ही श्रेष्ठ धर्म है।' अगर अपने से दीन—हीन, असहाय, अभावग्रस्त, आश्रित, वृद्ध, विकलांग, जरूरतमंद व्यक्ति पर दया दिखाते हुए उसकी सेवा और सहायता न की जाए, तो समाज भला कैसे उन्नति करेगा? सच तो यह है कि सेवा ही असल में मानव जीवन का सौंदर्य और शृंगार है। सेवा न केवल मानव जीवन की शोभा है, अपितु यह भगवान की सच्ची पूजा भी है। भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी पिलाना, विद्यारहितों को विद्या देना ही सच्ची मानवता है।

सेवा से मिलता मेवा: दूसरों की सेवा से हमें पुण्य मिलता है— यह सही है, पर इससे तो हमें भी संतोष और असीम शांति प्राप्त होती है। परोपकार एक ऐसी भावना है, जिससे दूसरों का तो भला होता है, खुद को भी आत्म—संतोष मिलता है। मानव प्रकृति भी यही है कि जब वह इस प्रकार की किसी उचित व उत्तम दिशा में आगे बढ़ता है और इससे उसे जो उपलब्धि प्राप्त होती है, उससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

सौ हाथों से कमाएं, हजार हाथों से दान दें: अथर्व वेद में कहा गया है 'शतहस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'। अर्थात् हे मानव, तू सैकड़ों हाथों से कमा और हजारों हाथों से दान कर। प्रकृति भी मनुष्य को कदम—कदम पर परोपकार की यही शिक्षा देती है। हमें प्रसन्न रखने और सुख देने के लिए फलों से लदे पेड़ अपनी समृद्धि लुटा देते हैं। पेड़—पौधे, जीव—जंतु उत्पन्न होते हैं, बढ़ते हैं और मानव का जितना भी उपकार कर सकते हैं, करते हैं तथा बाद में प्रकृति में लीन हो जाते हैं। उनके ऐसे व्यवहार से ऐसा लगता है कि इनका अस्तित्व ही

दूसरों के लिए सुख—साधन जुटाने के लिए हुआ हो।

सूर्य धूप का अपना कोष लुटा देता है और बदले में कुछ नहीं मांगता। चंद्रमा अपनी शीतल चांदनी से रात्रि को सुशोभित करता है। शांति की ओस टपकाता है और वह भी बिना कुछ मांगे व बिना किसी भेदभाव के। प्रकृति बिना किसी अपेक्षा के अपने कार्य में लगी है और इससे संसार—चक्र चल रहा है।

दया धर्म है, पर पीड़ा पाप है, दूसरों के साथ दयालुता का दृष्टिकोण अपनाएने से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इसी तरह अगर किसी को अकारण दुख दिया जाता है और उसे पीड़ा पहुंचाई जाती है, तो इसके समान कोई पाप नहीं है। ऋषि—मुनियों ने बार—बार कहा है कि धरती पर जन्म लेना उसी का सार्थक है, जो प्रकृति की भांति दूसरों की भलाई करने में प्रसन्नता का अनुभव करे। एक श्रेष्ठ मानव के लिए सिर्फ परोपकार करना ही काफी नहीं है, बल्कि इसके साथ—साथ देश और समाज की भलाई करना भी उसका धर्म है। बेशक, आज के युग में भी कुछ ऐसे लोग हैं, जो अपने सुखों को छोड़कर दूसरों की भलाई करने में और दूसरों का जीवन बचाने में अपना जीवन होम कर रहे हैं, पर साथ ही, कुछ ऐसे अभागे इंसान भी हैं, जिन्हें आतंक और अशांति फैलाने में आनंद की अनुभूति होती है। ऐसे लोग मानव होते हुए भी क्या कुछ खो रहे हैं, इसका उन्हें अहसास नहीं है।

सबका हित, अपना हित : गीता (12.4) में लिखा है, जो सब प्राणियों का हित करने में लगे हैं, वे मुझे ही प्राप्त करते हैं।' विद्वान लोग विद्या देकर, वैद्य और डॉक्टर रोगियों की चिकित्सा करके, धनी व्यक्ति निर्धनों की सहायता करके तथा शेष लोग



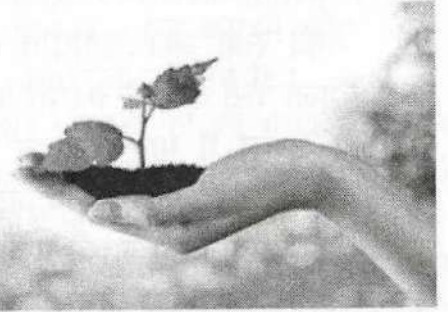
अपने प्रत्येक कार्य से सभी का हित करें, तो धरती पर मौजूदा सभी प्राणियों का भला हो सकता है। यही सच्ची भक्ति है।

'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'— इस भाव को अपनाकर ही देश और समाज का भला हो सकता है। चाणक्य ने कहा था— 'परोपकार ही जीवन है।

जिस शरीर से धर्म नहीं हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर का क्या लाभ?' सेवा या परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। इसलिए हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।



पर्यावरण



महेन्द्र पाल

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पर्यावरण और जीवित चीजों के बीच नियमित रूप से विभिन्न चक्र घटित होते रहते हैं। हालांकि, अगर किसी भी कारण से ये चक्र बिगड़ जाते हैं तो प्रकृति का भी संतुलन बिगड़ जाता है जो की अंततः मानव जीवन को प्रभावित करता है। हमारा पर्यावरण हजारों वर्षों से हमें और अन्य प्रकार के जीवों को धरती पर बढ़ने, विकसित होने और पनपने में मदद कर रहा है। मनुष्य पृथ्वी पर प्रकृति द्वारा बनाई गई सबसे बुद्धिमान प्राणी के रूप में माना जाता है इसीलिए उनमें ब्रह्मांड के बारे में पता करने की उत्सुकता बहुत ज्यादा है जोकि उन्हें तकनीकी उन्नति की दिशा में ले जाता है। हर व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार की तकनीकी उन्नति दिन-ब-दिन पृथ्वी पर जीवन की संभावनाओं को खतरे में डाल रही है क्योंकि हमारा पर्यावरण धीरे-धीरे नष्ट हो रहा है। ऐसा लगता है की ये एक दिन जीवन के लिए बहुत हानिकारक हो जाएगी क्योंकि प्राकृतिक हवा, मिट्टी और पानी प्रदूषित होते जा रहे हैं। हालाँकि इसने इंसान, पशु, पौधे और अन्य जीवित चीजों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है। हानिकारक रसायनों के

उपयोग द्वारा कृत्रिम रूप से तैयार उर्वरक जो की मिट्टी को खराब कर रहे हैं परोक्ष रूप से हमारे दैनिक खाना खाने के माध्यम से हमारे शरीर में एकत्र हो रहे हैं। औद्योगिक कंपनियों से उत्पन्न हानिकारक धुँआँ दैनिक आधार पर प्राकृतिक हवा को प्रदूषित कर रहे हैं जो की काफी हद तक हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं।

इस व्यस्त, भीड़ और उन्नत जीवन में हमें दैनिक आधार पर छोटी छोटी बुरी आदतों का ख्याल रखना चाहिए। यह सत्य है की हर किसी के छोटे से छोटे प्रयास से हम हमारे बिगड़ते पर्यावरण की दिशा में एक बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। हमें हमारे स्वार्थ के लिए और हमारी विनाशकारी इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का गलत उपयोग नहीं करना चाहिए। हमें हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास करना चाहिए लेकिन हमेशा यह सुनिश्चित रहे की भविष्य में हमारे पर्यावरण को इससे कोई नुकसान न हो। हमें सुनिश्चित होना चाहिए की नई तकनीक हमारे पारिस्थिति की संतुलन को कभी गड़बड़ न करे।



सेवा और समर्पण से संतुष्टि

□ लीला तिवारी

डॉ. समिधा अपने अस्पताल में अभी-अभी एक ऑपरेशन करके अपने कमरे में आई थी और एक कुर्सी पर बैठ गई। रात में तीन घंटे का ऑपरेशन उसके लिए भी कम थकाऊ नहीं था। उसने मेज पर सिर रखकर आंखें मूंद ली और पहुंच गई अतीत में। बचपन में उसने दादी से पूछा था— “दादी जी, आपने मेरा नाम समिधा क्यों रखा? समिधा का क्या अर्थ है?”

“बेटा, समिधा का मतलब है— “लकड़ी, विशेषतः यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी, हवन, यज्ञ आदि की सामग्री “ये सब तो यज्ञकुंड में जल जाने के लिए हैं, तो क्या मुझे भी ऐसा ही करना पड़ेगा?”

“बेटा, जो समिधा बनने के लिए तैयार होता है, उसका जीवन ही सच्चा जीवन है. सेवा और समर्पण हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए?”

दादी की इस बात को ध्यान में रखते हुए ही उसने डॉक्टर बनकर सेवा और समर्पण अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। डॉक्टर की डिग्री पाने पर ली जाने वाली हिपोक्रेटिक ओथ मरीज की जान बचाने की शपथ को उसने न सिर्फ सच में जिया, बल्कि अपनी जिदगी का मूलमंत्र बना लिया।

आज अपने पोते के साथ जो बुजुर्ग महिला इलाज के लिए आई थी, उसमें समिधा को दादी की झलक दिखाई दी। ज़रूरी जांच के बाद उसने पांच लाख का खर्च बताया था। यह सुनते ही पोता उदास हो गया था। समिधा ने पांच लाख का नाम सुनते ही उसकी उदासी को ताड़ लिया था और उसे निश्चित करते हुए कहा था—“आप चिंता न करें, यह आपकी ही नहीं मेरी भी दादी जी हैं, इनको कुछ नहीं होगा।

ऑपरेशन के बाद जैसे ही महिला को होश आ गया था, समिधा ने खुद उसके पोते के पास जाकर उसको बधाई देते हुए कहा था— “दादी जी का ऑपरेशन सफल हो गया है, अभी आप उनको दूर से देख लीजिए, थोड़ी देर बाद आप उनसे मुलाकात कर बात कर पाएंगे।

इस प्रकार जहाँ एक ओर समिधा उस वृद्ध महिला को ऑपरेशन के बाद खुश देख कर अपनी सेवा और समर्पण से खुद को संतुष्ट पा रही थी वहीं वह अपने दादी की मनोकामना पूर्ण करने में मानो अपनी सफलता का अनुभव भी कर रही थी।

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य-गीत, कथा-कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य है। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुग्रहीत करें। हमारा पता है—

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918



मैं कावेरी बोल रही हूँ

□ अभय मिश्र

आदरणीय महोदय!

मैं कावेरी नदी हूँ, मुझे दक्षिण की गंगा भी कहा जाता है। ऋषि अगस्त ने दिया था यह सम्मान मुझे, जब वे निकले थे उत्तर और दक्षिण की एकता के सूत्र तलाशने। एक वह समय था और एक आज है, आज मेरे तट पर बसने वाले मेरे बच्चे ही मेरा पानी लाल करने पर आतुर हैं। दक्षिण बँट रहा है और उसका कारण मैं हूँ... लेकिन मेरी इस हालत के जिम्मेदार आप भी हैं, आप, जी हाँ आप, आपने कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, पुदुचेरी सहित केन्द्र का पक्ष तो सुना लेकिन कभी मेरा पक्ष जानने की कोशिश ही नहीं की।

आप सब मिलकर मेरा पानी आपस में बाँटते रहे लेकिन कभी इस पर विचार नहीं किया कि नदी के पानी पर नदी का हिस्सा भी होता है, उसे भी जिन्दा रहने के लिये पानी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पूरे समाज को चाहिए। माँ के स्तनपान और रक्तपान में फर्क होता है हमेशा मेरी क्षमता से अधिक मेरा दोहन किया गया और इस हद तक विवाद पैदा किया गया कि मुझे ही आत्मग्लानि होने लगे।

कहाँ तो मैं सोना उगलती थी और खेतों को भी सोने की तरह लहलहा देती थी, कुबेर की बेटी जैसा सम्मान था कावेरी का, वहीं आज सीवेज और कारखानों का वेस्टेज मिला पानी मेरे साथ-साथ मेरे बच्चों को भी बीमार बना रहा है, आपने सोचा है कुर्ग से लेकर बंगाल की खाड़ी तक कितनी जगह प्रदूषण से नहाई हूँ मैं।

कुर्ग रियासत का क्षेत्र ही है जहाँ से निकलती हूँ मैं, यहीं अवतरित हुयी थी दक्षिण का कल्याण करने हेतु। चौंकिए मत कुएँ, तालाब, झील, नहर सब कुछ मानव निर्मित होते हैं या हो सकते हैं लेकिन नदी को इंसान नहीं बनाता वह अवतरित होती है, किसी व्यवस्था की बपौती बनकर नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिये। अब ये समाज पर निर्भर करता है कि वह कब तक ईश्वरीय देन को अवतार बनाकर रखता है।

कुर्ग की पहाड़ियों से लेकर समुद्र तक लगभग 800 किलोमीटर की यात्रा में सैकड़ों बार मेरा रूप बदलता है, कहीं दो चट्टानों के बीच बहती पतली धारा तो कहीं दो किलोमीटर की चौड़ाई लिये हुए होता है मेरा पाट। मेरा हर रूप मेरे तट में बसने वालों की भलाई के लिये था लेकिन आपके आदेश और सरकारी नीतियों ने मुझे कुरूप बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी अपने रास्ते में आने वाली तकरीबन पचास नदियों को साथ लेकर समुद्र तक जाती हूँ मैं।

मेरे पानी के लिये लड़ने वालों को भी याद नहीं होगा कि कितनी जगह से मुझे काटकर उन्होंने नहर निकाली है। आज भी मेरे पानी से डेढ़ करोड़ हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है लेकिन मैं कितना भी कर लूँ लालच को पूरा नहीं कर पाऊँगी। आप जानते हैं मेरा वास्तविक नाम काविरि है, काविरि का अर्थ है— उपवनों का विस्तार करने वाली। अपने जल से ऊसर भूमि को भी वह उपजाऊ बना देती है।

समुद्र में जमाने से पहले मैं कितने शहरों, कस्बों और तीर्थ स्थानों को तारती हूँ इसका अन्दाजा भी इन चक्काजाम करने वालों को नहीं होगा। एक समय था जब पहार नामक बन्दरगाह मेरी विदाई को स्मरणीय बनाता था, सैकड़ों साल पहले जब राजसत्ता होती थी, पहार बंगाल की खाड़ी में मेरा अन्तिम पड़ाव था।

दक्षिण का सबसे ज्यादा व्यापार मेरे ही दामन से शुरू होता था और आज मैं एक वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं हूँ, जिसे आपस में बाँटने के लिये लोग आपकी तरफ देख रहे हैं। क्या मेरा सम्मान इतना ही है, मेरे तट पर बड़े-बड़े वीरों, राजाओं, दानियों, कवियों ने जन्म लिया, कंबन ने अपनी रामायण भी मेरे ही तट पर रची। आपसे निवेदन है मेरे देय को इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाये नाकि कुछ चालाक राजनेताओं और लालच के सन्दर्भ में। मेरी याचिका है कि मुझमें थोड़ा मुझे भी रहने दें ताकि महसूस कर सकूँ मैं, कि मैं नदी हूँ, माँ हूँ।



हेलमेट पहनना हमारे हित में

श्याम कुमार

इस समय हमारा प्रशासन दुपहिया वाहन वालों को हेलमेट पहनाने पर दिन-रात गजब की मुस्तैदी व पूरी ताकत से जुटा हुआ है। यहां तक कि अखबारों में यह सचित्र विवरण भी प्रकाशित हुआ है कि पुलिस बल दुपहिया वाहन चालकों को बंदूक की नोक पर चारों ओर इस प्रकार घेरकर रोक रहा है, जैसे वे कोई अपराधी हों। लोगों का कहना है कि यदि पुलिस व सिविल प्रशासन इसका छोटा-सा अंश भी सड़कों पर अटे पड़े अतिक्रमणों को हटाने में लगा देता तो जनता का सचमुच बड़ा भला हो जाता। लेकिन प्रशासन इस बात पर न तो ध्यान दे रहा है और न समझने की कोशिश कर रहा है कि अतिक्रमणों एवं अवैध निर्माणों के कारण जब रास्ते लगभग गायब होते जा रहे हैं और उन पर चलने की जगह ही नहीं मिल रही है तो क्या हेलमेट वहां रास्ता बना देगा?

अतिक्रमणों ने सड़कों को नरक बना रखा है तथा उन पर चलने लायक जगह नहीं मिल रही है। अधिकांश सड़कों पर प्रायः जाम लगा रहता है। जाम में फंसे लोगों को यह नहीं पता चल पाता है कि आखिर जाम लगा क्यों है और जाम में फंसे लोगों को उससे निजात कब मिल पाएगी? कड़ी धूप में बच्चे बिलबिलाते रहते हैं, स्त्रियां व वृद्धजन बेहद परेशान रहते हैं, लेकिन वहां पुलिस जाम हटवाने के बजाय गायब रहती है। मैं असंख्य बार जाम में दुर्गति झेल चुका हूं। एक बार लखनऊ में एक सड़क पर जाम का अंत नहीं हो रहा था और जब मैंने यातायात पुलिस अधीक्षक को फोन किया तो उनका उत्तर था—'हम वीआईपी ड्यूटी करें कि जाम हटवाएं? जाम में फंसे लोग हमारी नौकरी नहीं ले सकते, लेकिन वीआईपी हमारी नौकरी ले लेंगे।'

सड़कों पर जाम एवं हादसों के सबसे बड़े कारण अतिक्रमण हैं। प्रदेश के सभी नगरों में अधिकांश सड़कें अतिक्रमणों एवं अवैध निर्माणों से अटी पड़ी हैं और उन पर यातायात रेंग-रेंगकर चल

पाता है, लेकिन अफसर अतिक्रमणों व अवैध निर्माणों की समाप्ति की ओर कभी ध्यान नहीं देते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह बताया जाता है कि उन अतिक्रमणों एवं अवैध निर्माणों से नगर निकायों व पुलिस के लोगों की जेब गरम होती है। ये उनकी हाई आमदनी का जरिया हैं। लखनऊ में अभी अमीनाबाद, नजीराबाद, रकाबगंज, गणेशगंज, इंदिरानगर, भूतनाथ आदि अनगिनत क्षेत्रों की तमाम सड़कों के उदाहरण ले लिए जाएं तो वहां सभी सड़कें अतिक्रमणों से भीषण रूप से भरी हुई मिलेंगी। दुकानदारों ने पटरियों को तो छेंक ही रखा है, उसके आगे भी बढ़कर सड़कों को इस बुरी तरह अपने-अपने कब्जे में ले रखा है कि उन पर चल पाना असंभव होता है।

लखनऊ में नरही क्षेत्र में पटरियों पर लोगों ने अपने मकानों को आगे बढ़ा लिया है और कई जगह गलियों को कब्जे में लेकर दोनों ओर फाटक लगाकर बंद कर दिया है। कबीर मार्ग पर लोगों ने अपने घर आगे बढ़ाकर पटरियों पर कब्जा कर लिया है। उदयगंज के पीछे नई बस्ती, बरफखाने की गलियों का भी यही हाल है। क्ले स्क्वायर आदि तमाम इलाकों की पटरियों को छेंककर लोगों ने कार खड़ी करने के गैराज बना लिए हैं। लखनऊ ही नहीं, पूरे प्रदेश में सड़कों-गलियों की यही दुर्दशा है। तमाम जगह पटरियों को बंद कर लोगों ने अपने घर में मिलाकर दुकानें बना ली हैं।

नगर निकायों व पुलिस के अफसरों को अतिक्रमण नहीं दिखाई देते हैं। नोटों के पुलिंदों के आगे उनकी आगे बंद हो जाती हैं। मैंने कई बार जनसूचना द्वारा लखनऊ नगर निगम से विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए अतिक्रमणों का उल्लेख करते हुए पूछा कि इन्हें कब तक हटाए जाने की योजना बनी है तो हर बार यह उत्तर मिलता है कि अतिक्रमण हटाए जाने की सतत प्रक्रिया चलती रहती है। वास्तविकता यह है कि सिर्फ दिखावे के लिए



कार्रवाई होती है तथा जिस दिन अतिक्रमण हटाए जाते हैं, उसके अगले दिन फिर से अतिक्रमण पुनः उसी रूप में या उससे भी बढ़कर लग जाते हैं। प्रायः सिविल व पुलिस के अफसर अतिक्रमणों की शिकायत फोन पर करने पर लिखकर देने को कहते हैं। पहली बात तो शिकायतकर्ता लिखकर दे तो अतिक्रमणकारियों से दुश्मनी मोल ले तथा गारंटी नहीं कि लिखकर देने का वह साहस करे भी तो अतिक्रमण हटा दिए जाएंगे। ऐसे तमाम उदाहरणों का मैं स्वयं भुक्तभोगी हूँ। सवाल यह है कि अफसर स्वयं क्यों नहीं अतिक्रमणों का पता लगाने का कष्ट करते हैं।

प्रशासन व सरकार को अभियान चलाकर हेलमेट पहनाने में अपनी शक्ति लगाना तो ठीक ही है पर इससे अधिक ध्यान उन अफसरों को दंडित करने में भी लगाना चाहिए, जिनकी लापरवाही या भ्रष्टाचार के परिणामस्वरूप अतिक्रमण हो रहे हैं तथा अवैध निर्माण कर लिए जाते हैं। चूंकि हमारे यहां दण्ड का कोई भय नहीं है, इसलिए अतिक्रमणकारी, अवैध निर्माणकर्ता एवं भ्रष्ट अफसर जानते हैं कि उन्हें कोई दण्ड नहीं मिलने वाला है। वस्तुतः अखबारों में भी अतिक्रमणों एवं अवैध निर्माणों के विरुद्ध निरंतर बड़ा एवं कारगर अभियान चलते रहना चाहिए।



रक्षा बन्धन

विनीता मिश्रा

रक्षा बंधन के बंधन बाबा, अब मेरे ऊपर बांधो ना।
अपनी रक्षा आप करुं, ऐसा साधन साधो ना।।

आने दो संसार में हमको, जनम पे बंधन बांधो ना।
आंगन- दहलीज लांघ सकूं मैं, कह दो मुझसे - लांघो ना।।

वो जो प्यारा बस्ता दिखता है, पीठ पे मेरी टांगो ना।
दान- दहेज बस कुल मर्यादा, मेरे हिस्से बांटो ना।।

है उड़ने की क्षमता मुझमें, पर मेरे यूं काटो ना।
कर के दान ना जन्म सुधारो, अपना अंश ही मानो ना।।

बेटों को भी सीख दो थोड़ी, बस तन मेरा ही ढांको ना।
कुल की मर्यादा उनसे भी है, उनको भी कुछ डांटों ना।।

पींगे बाग लगा ली कितनी, झूला और कहीं अब, टांगो ना।
एक बार बस मौका देदो, बात को मेरी टालो ना।।

रक्षा बंधन के बंधन बाबा, मेरे ऊपर बांधो ना।।
अपनी रक्षा आप करुं, ऐसा साधन साधो ना।।



पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र



ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध



जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

- राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।



गंगा है संस्कृति हमारी

□ महेश चन्द्र त्रिपाठी

स्वच्छ और गंदे नाले में
भेद नहीं करती गंगा
सबका जल समेट अपने में
निशिवासर बहती गंगा

गंगा तट पर सभी टहलते
सभी नहाते गंगा में
मुर्दे जले, अधजले भी हैं
लोग बहाते गंगा में

गंगा में सब लोग नहाते
सब पीते हैं गंगाजल
आओ यत्न करें हम जिससे
गंगा रहे सदा निर्मल

देता है सुख-शांति सभी को
गंगा का पावन दर्शन
परमानंद उसे मिलता जो
करता मज्जन अवगाहन

आओ हम गंगा से सीखें
अविरल प्रवहमान रहना
नहीं भटकना कभी लक्ष्य से
पथ की हर पीड़ा सहना

गंगा है संस्कृति हमारी

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र



सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738
Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,

'सेवा संवाद'

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/
जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क 200/-
अथवा आजीवन शुल्क 2000/- रुपये 'सेवा संवाद' के पक्ष में नकद/बैंक
ड्राफ्ट/चेक सं. दिनांक बैंक
..... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की
रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :

नाम :

पता :

जिला:

प्रदेश : पिन:

मोबाइल:

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया,
निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806)
में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।



तालाब की परंपराओं को भूलता देश

□ आर. एस. रमन

जलस्रोतों में नदियों के बाद तालाबों का सर्वाधिक महत्व है। तालाबों से सभी जीव-जंतु अपनी प्यास बुझाते हैं। किसान तालाबों से खेतों की सिंचाई करते रहे हैं। हमारे देश में आज भी सिंचाई के आधुनिकतम संसाधनों की भारी कमी है, जिस कारण किसान वर्षा तथा तालाब के पानी पर निर्भर हैं। लेकिन तालाबों की निरंतर कमी होती जा रही है। लगता है, हम तालाबों के महत्व को भूलते जा रहे हैं।

देश में 6,38,365 गांव हैं। इनमें से डेढ़ लाख से भी अधिक गांवों में पेयजल की किल्लत है। लगभग ७२ प्रतिशत छोटे तथा सीमांत किसानों की फसलें पानी की कमी के कारण ठीक तरह फल-फूल नहीं पातीं। नदियों से निकलने वाली नहरों को न तो चौड़ा किया जा रहा है और न ही उनकी साफ-सफाई हो रही है। नतीजतन उनका वजूद मिटता जा रहा है। इसके अलावा देश में कई राज्य तथा पहाड़ी क्षेत्र ऐसे हैं, जहां नहरें ही नहीं, और हैं भी, तो अपर्याप्त।

वर्षा जल या किसी झरने के पानी को रोकने के लिए बनाए जाने वाले तालाबों का प्रचलन अत्यधिक प्राचीन है। निचली धरती पर पानी भर जाने से कुछ तालाब अपने आप बन जाते रहे हैं। रामायण काल के तालाबों में शृंगवेरपुर का तालाब प्रसिद्ध रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक डॉ. बी. वी. लाल ने पुराने साक्ष्य के आधार पर इलाहाबाद से ६० किलोमीटर दूर खुदाई कर इस तालाब को खोजा है। यह तालाब ईसा पूर्व सातवीं सदी का बना हुआ है। महाभारतकालीन तालाबों में कुरुक्षेत्र का ब्रह्मसर, करनाल की कर्णझील और मेरठ के पास हस्तिनापुर का शुक्रताल आज भी हैं।

रामायण और महाभारत काल को छोड़ दें, तो

पांचवी सदी से पंद्रहवी सदी तक देश में तालाब बनते ही जा रहे थे। रीवा रियासत में पिछली सदी में 5,000 तालाब थे। वर्ष 1847 तक मद्रास प्रेसीडेंसी में 53,000 तालाब थे। वर्ष 1980 तक मैसूर राज्य में 39,000 तालाब थे। अंग्रेजों के आने से पहले दिल्ली में 350 तालाब थे, जिनमें से अधिकांश अब लुप्त हो चुके हैं। भोपाल का तालाब अपनी विशालता के कारण देश में मशहूर था। इसे ग्यारहवीं सदी में राजा भोज ने बनवाया था। पच्चीस वर्गमील में फैले इस तालाब में 365 नालों-नदियों का पानी भरता था। मालवा के शाह होशंगशाह ने 15वीं सदी में इसे सामरिक कारणों से तुड़वाया, तो तीन वर्ष तक पानी निकाले जाने के बाद उसका तल दिखाई दिया। इसके आगे का दलदल 30 वर्षों तक बना रहा। जब यह सूख गया, तब इसमें खेती आरंभ की गई।

वर्ष 1335 में महाराज घड़सी ने जैसलमेर में 120 वर्ग मील लंबा-चौड़ा घड़सीसर खुदवाया था। इसी तरह जयपुर के पास गोला ताल है। कहते हैं, जयगढ़ के राजा ने जयबाण नामक एक तोप बनवाई थी। परीक्षण के लिए यह तोप किले के बुर्ज पर चढ़ाकर एक गोला दागा गया, जो चाकसू नामक स्थान पर 20 मील दूर जाकर गिरा। विस्फोट इतना भयंकर था कि एक लंबा, चौड़ा और गहरा गड्ढा बन गया। बरसात में इसमें पानी भर गया, जो कभी सूखा नहीं। आबू पर्वत के पास एक नखी सरोवर तालाब है। कहते हैं कि इस तालाब को देवताओं और ऋषियों ने अपने नाखूनों से खोदकर तैयार किया था, जिससे उस क्षेत्र के प्राणियों को पानी प्राप्त हो सके।

गोंड समाज का तालाबों से गहरा संबंध है। जबलपुर के पास कूडन गोंड द्वारा बनाया गया तालाब आज लगभग हजार वर्ष बाद भी काम आ रहा है। इसी समाज से रानी दुर्गावती थीं, जिन्होंने



थोड़े समय में अपने क्षेत्र के एक बड़े भाग को तालाबों से भर दिया था। चंदेलों—बुंदेलों के समय में एक—एक हजार एकड़ के बनवाए गए बरुआ सागर और अरजर सागर तालाब आज भी सिंचाई के काम आते हैं। बरुआ सागर ओरछा के नरेश उदित सिंह ने और अरजर सागर राजा सुरजन सिंह ने क्रमशः वर्ष 1737 और 1671 में खुदवाए थे। बंगाल में पोखरों की उज्ज्वल परंपरा है। उन पोखरों में मछलियां भी पाली जाती हैं। हालांकि अब वहां भी पोखर कम होते जा रहे हैं, जिस कारण मछली उत्पादन भी प्रभावित हुआ है।

एक समय था, जब देश में तालाब बनाने की होड़—सी लगी रहती थी। तालाब की जगह का चुनाव बुलई करते थे। गजधर जमीन की पैमाइश करते थे। सिलवट पत्थर का काम करते थे। सिरभाव बिना औजार के पानी की ठीक जगह बताते थे। जलसूंधा आम अथवा जामुन की लकड़ी से भूजल सूंघकर उसका विश्लेषण करते थे। पथरोट और टंकार तालाब बनाते थे। खंती मिट्टी काटते थे। सोनकर मिट्टी खोदते थे। मटकूट मिट्टी कूटते थे। ईट और चूने—गारे का काम चुनकर करते

थे। दुसाध, नौनिया, गोंड, परधान, कोल, धीमर, भोई, लुनिया, मुरहा और झांसी तालाब बनाने वाले अच्छे कारीगर माने जाते थे।

अब सरकारें तालाबों को भूल चुकी हैं। यही कारण है कि तालाब खुदवाने की जगह पाटने की सूचनाएं ज्यादा मिलती हैं। सरकारें पीने तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवेल, पंपसेट, हैंडपंप आदि पर जोर देती हैं, परंतु तालाब का महत्व नहीं समझती। जल स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। इस समय देश में पानी की भारी कमी है। यदि सरकार और जनता तालाब निर्माण की ओर एक बार जागृत हो जाए, तो संभवतः पानी की कमी दूर की जा सकती है। मत्स्यपुराण में कहा गया है— दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। अस्तु आवश्यकता है कि हम सभी अपने अपने स्तर जितना कर सकते हों वृक्षारोपण करें जल संरक्षार्थ जल का अपव्यय न करें। कल्याणकारी उपयोगी परम्पराओं को पुनःस्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहें।



पुण्य आत्मा-सन्त

□ रोहित मौर्य

एक औरत अपने बच्चे को एक संत के पास लेकर गई। उसने संत से कहा, मेरे डॉक्टर ने कहा है कि मेरे बेटे को मधुमेह है। इसलिए उसे मीठा नहीं खाना चाहिए। लेकिन अगर मैं उसे मना करूंगी, तो वो मीठा खाना बंद नहीं करेगा। चूंकि आप एक पुण्य आत्मा हैं, इसलिए मुझे यकीन है कि अगर आप उसे मीठा खाने के लिए मना करेंगे तो वो आपकी बात जरूर सुनेगा और इस तरह उसका जीवन सुरक्षित रह सकेगा। संत ने एक क्षण के लिए कुछ सोचा और फिर उस महिला से कहा, मैं बच्चे को आज मीठा खाने के लिए मना नहीं कर सकता। उसे वापस कल मेरे पास लेकर

आओ। निराशा और उलझन के साथ महिला बच्चे को लेकर वापस लौट गई।

अगले दिन वह फिर संत के पास आई। संत ने कड़ाई से लड़के को देखा और कहा, तुम्हें मीठा खाना बंद कर देना चाहिए। लड़का इतना चौंका हुआ था कि उसने उस दिन के बाद मीठा खाना छोड़ दिया। जब मां ने उत्सुकता से उस संत से पूछा, स्वामीजी, आपने यही बात कल मेरे बेटे से क्यों नहीं कही थी? संत ने जवाब दिया, क्योंकि कल जब तुम मेरे पास आई थी, तब मैं खुद मीठा खा रहा था।

स्वस्थ जीवन के लिये ऋतुचर्या का ज्ञान

रोग की चिकित्सा करने की अपेक्षा रोग को न होने देना ही अधिक श्रेष्ठ है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि चर्यात्रय अर्थात् ऋतुचर्या, दिनचर्या तथा रात्रिचर्या के सम्यक् परिपालन से रोग का निश्चय ही प्रतिरोध होता है।

श्रेष्ठ पुरुष स्वास्थ्य को ही सदा चाहते हैं, अतः वैद्य को चाहिये कि मनुष्य जिस विधि के सेवन से सदा स्वस्थ रहे उसी विधि का सेवन करायें आयुर्वेद शास्त्र में दिनचर्या तथा रात्रिचर्या की जो विधि वर्णित की गयी है, उसका नियमपूर्वक आचरण करने से मनुष्य सदा स्वस्थ रह सकता है। ऋतुओं के लक्षणों से पूर्णरूप से अवगत हो जाने के उपरान्त उनके अनुकूल आहार, विहार का सेवन करना चाहिए। अतः ऋतुचर्या के वर्णन से पूर्व ऋतु-विभाग का संक्षिप्त ज्ञान होना आवश्यक है।

प्रकृतिकृत शीतोष्णादि सम्पूर्ण काल को ऋषियों ने एक वर्ष में संवरण किया है, सूर्य एवं चन्द्रमा की गति-विभेद से वर्ष के दो विभाग किये गये हैं, जिन्हें अयन कहते हैं, वे अयन दो हैं—1—उत्तरायण और 2—दक्षिणायन। उत्तरायण में रात्रि छोटी तथा दिन बड़े होने एवं सूर्य-रश्मियों के प्रखर होने से चराचर की शक्ति का शोषण होता है, इसलिये इसे आदानकाल भी कहा गया है और दक्षिणायन में दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी होने से चन्द्रमा की मरीचिकाएँ प्रबल होती हैं, जिनसे प्राणियों को बल प्राप्त होकर पोषण का कार्य स्वाभाविक रूप से स्वतः ही होता रहता है।

इन अयनों में प्रत्येक के तीन-तीन उपविभाग किये गये हैं, जिन्हें ऋतु कहते हैं, स्थूल रूप से उत्तरायण में— शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म-ऋतुएँ और दक्षिणायन में—वर्षा, शरद् तथा हेमन्त-ऋतुएँ पड़ती हैं, इस भाँति पूरे वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं। आयुर्वेदशास्त्र में दोषों के संचय, प्रकोप तथा उपशम के लिये इन्हीं छः ऋतुओं को मानते हैं।

वर्षा-ऋतु (श्रावण-भाद्रपद) : वर्षा-ऋतु में चारों ओर हरियाली एवं गगन मेघाच्छन्न रहता है, दूषित जल तथा वाष्पयुक्त वायु से पाचन-प्रणाली पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जिससे मन्दान्नि हो जाती

है, तुषारपूर्ण शीतल वायु से तथा ग्रीष्मे संचयीते वायुः प्राविट् (वर्षा)-काले प्रकुप्याति-से शरीर के अन्दर की वायु पृथ्वी की दूषित वाष्प से और जलों के अम्लपाक होने तथा जल-वायु की मलिनता से पित तथा अग्निमान्द्य होने और पशु-कीटादि के मल-मूत्रादि के संसर्ग से वर्षा का जल मलिन हो जाने से कफ कुपित हो जाता है। इन दिनों वायु, पित तथा कफ आदि के पृथक-पृथक अथवा दो-दो या तीनों दोषों के मिल जाने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। अतः वर्षा-ऋतु में अग्नि की भलीभाँति रक्षा करनी चाहिये। अग्नि के शान्त हो जाने से स्वास्थ्य पर बहुत ही घातक परिणाम होता है। अग्नि के विकृत होने पर पुरुष नाना प्रकार के रोगों से आक्रान्त होता है। इसलिये सुन्दर स्वास्थ्य के लिये जैसे त्रिस्थूणों का सन्तुलन बनाये रखना आवश्यक है, उसी भाँति अग्नि की साम्यावस्था बनाये रखना भी अपरिहार्य है, समदोषः समान्निश्च स्वस्थ इत्यभिधीयते।

वर्षाकाल में अग्निवर्द्धक पदार्थों का सेवन, वातनाशक तथा पाचक औषधियों से विरेचन लेना, मूँग आदि का जूस, पुराने यव, गेहूँ, शालिचावल, षड्रस, मस्तु (जल दही का), काला नमक, पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ मिलाकर पीना चाहिये। गरम दुग्ध, करैला, तोरई, नीबू, अंजीर, खजूर, आम, खांड, छाछ, गुड़, परवल, संधा नमक मिली हरड़ कुँ या वर्षा का जल अथवा उबला हुआ जल-सेवन करना चाहिये। अधिक वर्षा के दिनों में खट्टे, लवणयुक्त एवं सिन्ध अन्न का प्रयोग करना चाहिये, शुष्कता में मधुयुक्त सुपाच्य द्रव्य सेवन करें। सुगन्धित तेल आदि लगाकर स्नान करें, वस्त्रों को इत्रादि से सुगन्धित करके धारण करना चाहिये और उन्हें समय-समय पर धूप में भी रखना चाहिये।

इस ऋतु में नदीतट का वास, नदी का जल, जलयुक्त सतू, दिन में निद्रा लेना, व्यायाम, अधिक परिश्रम, धूप, रुक्ष द्रव्यों का सेवन, स्त्री-सहवास आदि त्याज्य है। यथा—

**उदमन्थं दिवास्वप्नमक्ययायं नदीजलम् ।
व्यायाममातपं चैव व्यवायं चात्र वर्जयेत् ॥**



पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है—सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 अगस्त	पुण्य—तिथि	उपन्यासकार : बाबू देवकीनन्दन खत्री
3 अगस्त	जन्म—दिवस	राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
4 अगस्त	जन्म—दिवस	हिमाचल के गौरव डॉ० यशवन्त सिंह परमार
5 अगस्त	पुण्य—तिथि	राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित मनोज चौहान
6 अगस्त	जन्म—दिवस	पानीबाबा : राजेन्द्र सिंह
7 अगस्त	जन्म—तिथि	राष्ट्र भक्त भानु प्रताप शुक्ल
8 अगस्त	राज्याभिषेक—दिवस	प्रतापी राजा कृष्णदेव राय
11 अगस्त	बलिदान—दिवस	अमर बलिदानी खुदीराम बोस
12 अगस्त	जन्म—दिवस	महान् वैज्ञानिक : डॉ० विक्रम साराभाई
13 अगस्त	जन्म—तिथि	मारवाड़ का रक्षक : वीर दुर्गादास राठौड़
13 अगस्त	जन्म—दिवस	सद्गुरु श्री टेम्बे महाराज
15 अगस्त	जन्म—दिवस	स्वतन्त्रता के उद्घोषक : श्री अरविन्द
16 अगस्त	पुण्य—तिथि	रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि
16 अगस्त	बलिदान—दिवस	स्वतन्त्रता प्रेमी वीर बालक : उदयचन्द्र
16 अगस्त	पुण्य तिथि	लोकप्रिय प्रधानमंत्री अटलविहारी बजपेई
17 अगस्त	पुण्य—तिथि	आधुनिक भगीरथ : दशरथ माँझी
17 अगस्त	बलिदान—दिवस	वजीर रामसिंह पठानिया
17 अगस्त	बलिदान—दिवस	अमर बलिदानी मदनलाल धींगड़ा
18 अगस्त	जन्म—तिथि	अपराजेय नायक : पेशवा बाजीराव
19 अगस्त	जन्म—दिवस	उत्तम साहित्य के प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदी
20 अगस्त	पुण्य—तिथि	इतिहासकार गंगाराम सम्राट
21 अगस्त	बलिदान—दिवस	शोएबुल्लाह का बलिदान
22 अगस्त	जन्म—दिवस	संकल्प के धनी : डॉ० जगमोहन गर्ग
23 अगस्त	पुण्य—तिथि	संगठन के मर्मज्ञ : श्री माधवराव देवड़े
25 अगस्त	पुण्य—तिथि	राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि
26 अगस्त	बलिदान—दिवस	हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानी पुरुषोत्तम जी ज्ञानी
27 अगस्त	पुण्य—तिथि	बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री प्रताप नारायण जी
27 अगस्त	जन्म—दिवस	वचन के धनी : शारदाचरण जोशी
28 अगस्त	जन्म—तिथि	प्रथम प्रचारक : बाबासाहब आष्टे
29 अगस्त	जन्म—तिथि	हाकी के जादूगर : ध्यानचन्द्र



सरस्वती संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ विद्या भारती सिक्किम

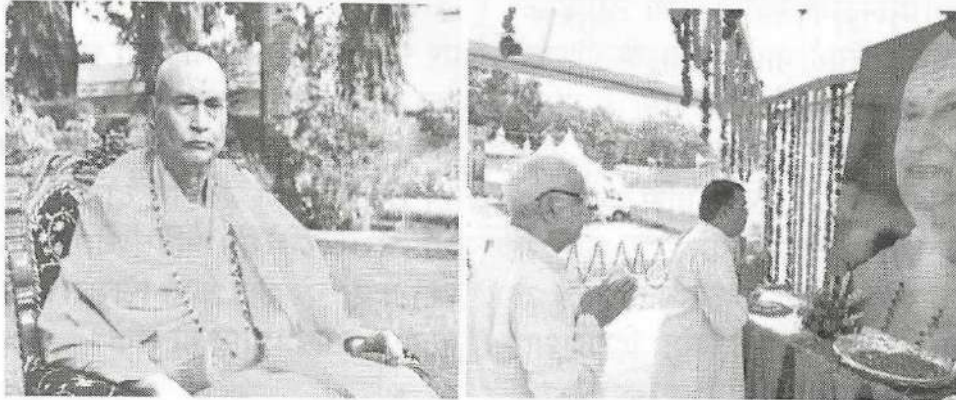
'विद्या भारती सिक्किम' प्रान्त समिति वर्तमान में सिक्किम के सरकारी 4 जिला (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) में से 3 जिला कार्ययुक्त है। पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग एवं कालिम्पोंग जिला मिलाकर प्रान्त समिति में कुल 6 जिला में से 5 कार्ययुक्त था सिक्किम के उत्तर जिला में कोई कार्य नहीं था। शिक्षा सत्र 2019-2020 में प्रान्त समिति के विशेष योजना एवं पहल पर इस जिला भी अब कार्य युक्त हो गया है। प्रान्त का प्रथम संस्कार केन्द्र 'सरस्वती संस्कार केन्द्र' इस नाम से उत्तर जिला के तिबुक, चार माइल में दिनांक 15 जून 2019 को पूजा-अर्चना एवं स्थानीय लोगों के उपस्थिति में संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर स्थानीय गांव के भैया-बहन, (विद्यार्थी) अभिभावक, ग्राम पंचायतगण, स्थानीय संचालन समिति एवं समाज के वरिष्ठजनों का उपस्थिति था। प्रान्त समिति से महासचिव श्री विजय कुमार शर्मा धिताल, संयोजक श्री मोहन शर्मा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहकर सरस्वती संस्कार केन्द्र का

उद्देश्य, संचालन एवं समाज का सहयोग के बारे में बताया। यह संस्कार केन्द्र से विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, संचालन एवं समाज का सहयोग के बारे में बताया। यह संस्कार केन्द्र से विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, संस्कार, देशप्रेम, खेलकूद आदि प्रदान किया जाएगा। यह केन्द्र 22 जून से 40 विद्यार्थियों को लेकर संचालन हो रहा है। कार्यक्रम में जिला पंचालय श्री जोमिन लिम्बू ने संस्कार केन्द्र प्रारम्भ होने पर विद्या भारती सिक्किम को आभार प्रकट करते हुए भविष्य में सहयोग करते रहने का वचन दिया। इस अवसर पर केन्द्र संचालन करने एवं उत्तर जिला में कार्य विस्तार हेतु एक समिति का भी गठन किया गया। समिति के अध्यक्ष श्री अजित कुमार लिम्बू एवं संयोजक सुश्री कृष्ण कुमारी लिम्बू एवं अन्य कार्यकारिणी के सदस्य हैं। यह केन्द्र प्रदेश का प्रथम संस्कार केन्द्र है। संस्कार केन्द्र के माध्यम से उत्तर जिला भी अब कार्ययुक्त हो गया है।

मोहन शर्मा (संयोजक, विद्या भारती सिक्किम)



श्रद्धांजलि



कीर्तिशेष स्वामी सत्यमित्रानन्द जी

भारत माता मंदिर के संस्थापक निवर्तमान शंकराचार्य, राष्ट्र व्यापी प्रतिष्ठा और आत्मीय व्यवहार के लिए सुप्रसिद्ध पद्मभूषण से सम्मानित आध्यात्मिक सन्त स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी मंगलवार दिनांक 25 जून 2019 को भौतिक शरीर के बन्धनों से मुक्त होकर परम सत्ता के श्री चरणों में विलीन हो गए। भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार जिसे स्वामी जी का आशीर्वाद और उनकी कृपा निरन्तर मिलती रही है, उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शान्ति: शान्ति: शान्ति

भाऊराव देवरस सेवा न्यास परिवार, लखनऊ



आई०एन०ओ० उ०प्र० ने योग दिवस पर द्वितीय स्थान पाकर प्रदेश का नाम किया रोशन।

डॉ० राणा के नेतृत्व में 19 लाख साधकों को कराया गया योग

इन्टरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन के प्रदेश संयोजक एवं प्रदेश मंत्री डॉ० रविन्द्र कुमार राणा ने केन्द्रीय नेतृत्व का आभार एवं कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि योग दिवस 2019 के उपलक्ष्य में 15 जून से 21 जून की अवधि में 15 लाख साधकों को योग अभ्यास कराने के लक्ष्य के सापेक्ष 19,30,276 साधकों को योग अभ्यास कराया गया। डॉ० राणा ने बताया कि इन्टरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन के तत्वाधान में सूर्या फाउन्डेशन के सहयोग से योग दिवस पर भारत के 32 राज्यों में योग अभ्यास कराया गया, इस दौरान महाराष्ट्र में 20 लाख, उत्तर प्रदेश में 19 लाख तथा

मध्य प्रदेश को तृतीय स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्टरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं में एवं प्रदेश का नाम रोशन करने पर भारी हर्ष है। डॉ० राणा ने सभी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों एवं योग शिक्षकों का आभार एवं उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि भविष्य में और अधिक सहभागिता कर हम सब अपने देश को उत्तम स्वास्थ्य एवं उत्तम विकास प्रदान करने के लिये योग के माध्यम से जीवन में स्वास्थ्य, सुख, शान्ति, समवन्ध तथा कल्याण्य संभव है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन्टरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन प्रयासरत हैं।



रक्षा बंधन पर रवीन्द्र नाथ टैगोर के विचार

प्रसिद्ध भारतीय लेखक रवीन्द्र नाथ टैगोर का मानना था, रक्षा बंधन सिर्फ भाई-बहन के बीच के रिश्ते को मजबूत करने का ही दिन नहीं है बल्कि इस दिन हमें अपने देशवासियों के साथ भी अपने संबंध मजबूत करने चाहिये। यह प्रसिद्ध लेखक बंगाल के विभाजन की बात सुनकर टूट चुके थे, अंग्रेजी सरकार ने अपनी फूट डालो राज करो के नीति के अंतर्गत इस राज्य को बांट दिया था।

हिन्दुओं और मुस्लिमों के बढ़ते टकराव के आधार पर यह बंटवारा किया गया था। यही वह समय था जब रविन्द्र नाथ टैगोर ने हिन्दुओं और मुस्लिमों को एक-दूसरे के करीब लाने के लिए रक्षा बंधन उत्सव की शुरुआत की, उन्होंने दोनो ही धर्मों के लोगों से एक दूसरे को यह पवित्र धागा बांधने और उनके रक्षा करने के लिए कहा जिससे दोनों धर्मों के लोगों के बीच संबंध प्रगाढ़ हो सके।



रक्षा बंधन

रक्षा बंधन वह उत्सव है जिसे भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के उपलक्ष्य में मानाया जाता है, यह त्यौहार सावन के शुभ महीने में आता है। इस दिन बहन द्वारा अपने भाई के कलाई पर एक पवित्र धागा बांधा जाता है और उनके अच्छे स्वास्थ्य तथा उज्ज्वल

भविष्य की कामना की जाती है। वहीं दूसरी तरफ भाइयों द्वारा अपनी बहनों को आशीर्वाद तथा रक्षा का वचन दिया जाता है। यह त्यौहार प्राचीन काल से ही काफी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। वैदिक काल से इसे श्रावणी पर्व के रूप में मनाया जाता है।



पाठकीय

□ महेश चन्द्र त्रिपाठी

अति उपयोगी पत्रिका है सेवा संवाद।
अंक जुलाई का कहे— जल न करें बर्बाद ॥

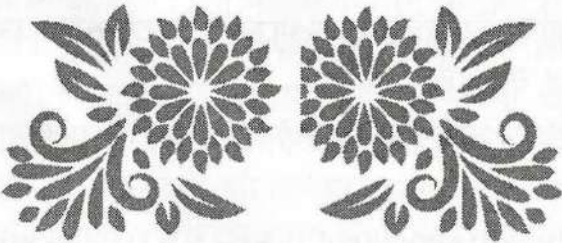
गंगा को अविरल रखें मिलती इससे सीख।
जनसेवा की प्रेरणा पड़ती इसमें दीख ॥

योगासन के लाभ—गुण का है यहाँ बखान।
जोखिम है एवरेस्ट पर चढ़ने में श्रीमान ॥

कैंसर से कैसे बचें, क्या लें हम आहार।
लक्ष्मीबाई केलकर से सीखें आचार ॥

मिलता है इस अंक में अन्य बहुत सा ज्ञान।
सब पुण्यों से बड़ा है सेवा पुण्य महान ॥

R-115 खुशवक्त राय नगर
फतेहपुर 212601 (उ. प्र.)
मो.08795155030



एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
सफदरजंग, नई दिल्ली में
प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों
की संख्या

1 अप्रैल 2019 से 30 जून 2019 तक

भारतीय राज्य/देश	मई 2019	जून 2019	कुल योग 2019-20
बिहार	814	357	1171
उत्तर प्रदेश	694	260	954
मध्य प्रदेश	155	80	235
झारखण्ड	106	47	153
राजस्थान	99	39	138
पश्चिम बंगाल	91	43	134
उत्तराखण्ड	78	46	124
हरियाणा	68	13	81
नेपाल	69	34	103
उड़ीसा	16	14	30
जम्मू और कश्मीर	41	27	68
छत्तीसगढ़	17	05	22
असम	07	13	20
गुजरात	11	03	14
हिमाचल प्रदेश	05	00	05
महाराष्ट्र	06	04	10
दिल्ली	16	00	16
त्रिपुरा	04	06	10
पंजाब	03	02	05
मनीपुर	00	00	00
अरुणाचल प्रदेश	05	03	08
आंध्र प्रदेश	00	00	00
चंडीगढ़	00	00	00
केरल	04	04	08
सिक्किम	00	02	02
तेलंगाना	00	00	00
बांग्लादेश	00	00	00
तमिलनाडू	00	00	00
अफगानिस्तान	00	00	00
कुल	2309	1002	3311



भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निराला नगर, लखनऊ - 226020 (उ.प्र.)

फोन-फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा के लिए- रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए- रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. विकलांग सहायता शिविर के लिए- रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए- रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति के लिए- प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए- रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद मासिक के लिए- रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम के लिए- रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. 680610100009948 IFSC: BKID0006806

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. 30448433657 IFSC: SBIN0003813

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।



प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न विद्या भारती राजस्थान

विद्या भारती के तत्वावधान में मा. शिक्षा बोर्ड राजस्थान की 10 वीं 12 वीं बोर्ड परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने वाले 34 भैया बहिनों व उनके अभिभावकों तथा प्रधानाचार्यों को प्रतीक चिह्न व श्रीफल देकर बिड़ला ऑडिटोरियम में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री शिव प्रसाद ने कहा कि विद्या भारती के विद्यार्थी उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

गोरक्ष धाम, गऊ घाट, जिला-बारां के श्री श्री 108 पूज्य श्री निरंजन नाथ जी महाराज ने अपने आशीर्वाचन में संस्कृति, भारतीयता व राष्ट्रीयता की भावना जगाने वाले विभिन्न प्रकल्पों के संचालन के लिए विद्या भारती को बधाई दी। उन्होंने कहा कि विश्व गुरु भारत की सांस्कृतिक पहचान संस्कृत भाषा ही विकास का आधार बनें।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधानसभा एवं पूर्व गृहमंत्री, राजस्थान सरकार श्री गुलाब चंद कटारिया ने सम्मानित होने वाले भैया बहिनों को शुभकामना देते हुए देश की संस्कृति व राष्ट्रीयता को बढ़ाने व नव निर्माण के कार्यों के लिए विद्या भारती के योगदान की सराहना की। उन्होंने विद्या भारती को समरसता का भाव जगाने वाली समाज द्वारा पोषित संस्था बताया। उन्होंने कहा कि संस्कार बिना शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विधायक अजमेर एवं पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार श्री वासुदेव देवनानी ने नई पीढ़ी के लिए शिक्षा का महत्व बताते हुए जीवन में आगे बढ़ने के लक्ष्य को

आवश्यक बताया। विद्या भारती को एक अद्भुत संगठन बताते हुए नई शिक्षा नीति की नवीन विशेषताओं को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने सभी प्रतिभावान विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को उपयोग स्वयं के साथ देश व समाज के लिए समर्पित करने का भाव अपनाने को कहा।

विशिष्ट अतिथि डॉ. यशु शर्मा, सहायक लेखा नियंत्रक, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने बोर्ड के श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम के लिए सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों व अभिभावकों का आभार प्रकट किया। उन्होंने जीवन में आशावादी दृष्टिकोण व आत्मविश्वास का गुण अपनाकर कठिन परिश्रम करते हुए सफलता को प्राप्त करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मन के डर को जीत कर ही आगे बढ़ा जा सकता



है। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलाधिपति डॉ. प्रकाश बरतूनिया ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में प्रतिभावान विद्यार्थियों को सफलता के इस उत्सव की उत्सव मूर्ति बताते हुए सभी प्रतिभावान विद्यार्थियों व आचार्यों को बधाई दी। उन्होंने बताया कि विद्या भारती कोई ब्रांड या प्रचार संस्था नहीं अपितु एक सेवा संगठन है। उन्होंने कहा कि कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।

विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के अध्यक्ष श्री भरतराम कुम्हार ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

कुंजबिहारी शर्मा



पानी का महत्व

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

पानी सफेद सोना है और यह सोना इस समय भारत के अधिकांशतः गांवों में सडकों और नालियों में बुरी तरह से बहाया अथवा फैलाया जा रहा है। इसी सफेद सोने की बूंद – बूंद के लिए भारत के कुछ हिस्सों में प्राणी तरस रहे हैं। लेकिन जहाँ यह अभी भी उपलब्ध है, वहाँ लोग इसे बचाने की तरफ कोई खास ध्यान ही नहीं दे रहे हैं उन्हें भी जल्द पता चलने वाला है कि एक बूंद कितनी कीमती है जब से गांवों में समरसेबिल बोरिंग पम्प इलेक्ट्रॉनिक लगना शुरू हुई हैं तब से लोग पानी को बहुत बुरी तरह से बर्बाद करने लगे हैं। एक आदमी नहाने में ही सैकड़ों लीटर पानी सडकों पर, नालियों में बहा देता है वो भी पूर्णतः स्वच्छ मिनरल वाटर। शहरों में जिसकी कीमत बहुत अधिक होती है और शायद ही ऐसा पानी मिलता हो।

भारत में बढ़ती जनसंख्या के साथ संसाधनों की जरूरत भी बढ़ रही है। लेकिन कुछ प्राकृतिक संसाधनों को हम अपनी मर्जी से बढ़ा भी नहीं सकते। कुछ पदार्थों के बगैर जिया जा सकता है परन्तु पानी के बगैर कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। आपकी जानकारी के लिए यहां यह बताना बेहद जरूरी है कि पहले हमें जल सम्पन्न देशों की श्रेणी में गिना जाता था, लेकिन अब हम जल सम्पन्न देशों की श्रेणी से बाहर हो चुके हैं। और यह कितना भयावह है कि इसका अंदाजा हम अभी नहीं लगा पा रहे हैं। लेकिन इस हकीकत से हम ज्यादा देर तक आँख मिचौली का खेल नहीं खेल सकते हैं, जल्द हम सबको पानी की एक-एक बूंद की कीमत का पता चलने वाला है।

निरन्तर भूजलस्तर का गिरना, पानी की कमी का खुला संकेत है पर हमारे पास तो बेहतर से बेहतर मशीनें हैं जो कितना भी गहरा पानी हो

उसकी बूंद-बूंद खींच लें, परन्तु आज तक ऐसी कोई मशीन नहीं बनी जो पानी बना सके।

भले ही भारत में वर्षा और हिमपात के रूप में पर्याप्त पानी बरसता है, लेकिन यह पूरा का पूरा पानी सही इस्तेमाल के लिए उपलब्ध नहीं है। अधिकांश पानी देश की विशिष्ट भू आकृति व अज्ञानतावश इधर-उधर से बहकर समुन्द्र में चला जाता है। कुछ हिस्सा भाप बनकर उड़ जाता है और थोड़ा बहुत बचता है, उसे ही धरती सोंख पाती है, इससे पर्याप्त रूप में पानी धरती के अन्दर नहीं पहुंच पाता और यही कारण है कि निरन्तर भूजलस्तर नीचे गिर रहा है। अपने देश में ही नहीं दुनियाभर में हालत इतनी नाजुक है कि अगर मौसम थोड़ी सी भी ऊँच-नीच कर देता है तो नतीजे भयानक रूप में निकल कर सामने आ जाते हैं।

अब वक्त की बहुत जरूरी मांग है कि लोगों को जागरुक हो जाना चाहिए। राजनेताओं से मुफ्त में मिली सम्बरसेबिल बोरिंग पम्पों का सही इस्तेमाल करें। पानी की जितनी जरूरत हो उतना ही खर्च करें। कोशिश करें कि कम से कम खर्च हो। जब बाल्टी से एक आदमी महज 10-12 लीटर पानी में नहा सकता है तो क्यों सिर पर पाइप लगाकर सैकड़ों लीटर पानी सडकों पर बहा रहे हो। गाड़ी धोने के गलत तरीके से हजारों लीटर पीने योग्य पानी को नालों में बहा रहे हो। बंद करो यह सब... वर्ना वो दिन दूर नहीं जब पानी की एक-एक बूंद के लिए तुम्हारा सारा सोना-चांदी, रुपया-पैसा कम पड़ जायेगा।

ग्राम रिहावली, डाक तारौली गूजर,
फतेहाबाद, आगरा, 283111



सूर्य नमस्कार के 12 आसन व विधियाँ

श्याम बाबू ओझा

सूर्य नमस्कार भी योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है। इस आसन को सुबह सूर्य के सामने करने चाहिए। जिससे हमें विटामिन डी मिलता है। इसके नियमित अभ्यास से मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है। वजन और मोटापा घटाने में भी सूर्य नमस्कार बेहद लाभकारी है। इसके अभ्यास से साधक का शरीर निरोगी और स्वस्थ रहता है। इस आसन को बच्चों से लेकर बड़ों तक, स्त्री हो या पुरुष कोई भी कर सकता है।

सूर्य नमस्कार के लाभ

सूर्य नमस्कार से हमारा सारा शरीर प्रभावित होता है। इससे हमारे शरीर को शक्ति और स्फूर्ति मिलती है। सूर्य नमस्कार से शरीर की मांसपेशियाँ, आमाशय, जिगर, गुर्दे, पित्ताशय को बल मिलता है, रीढ़ की हड्डी मजबूत बनती और कमर में लचक उत्पन्न होती है। सूर्य नमस्कार हमारे शरीर के त्वचा सम्बन्धित रोगों का, उदर के रोगों का शमन करता और पाचन तंत्र की क्रियाशीलता में वृद्धि करता है। इसके नियमित अभ्यास से मन एकाग्र होता है और आलस्य, अतिनिद्रा आदि विकार दूर हो जाते हैं। सूर्य नमस्कार करने से आँखों की रोशनी बढ़ती है, खून का प्रवाह तेज होता है, ब्लड प्रेशर में आराम मिलता है और कई रोगों से छुटकारा मिलता है।

सूर्यनमस्कार के आसन व विधियाँ

सूर्य नमस्कार में कुल 12 आसन होते हैं। इसमें 6 विधि के बाद फिर उन्हीं 6 विधि को उल्टे क्रम में दोहराते हैं। इस आसन को सुबह सूर्य की किरणों के सामने करना चाहिए। इन आसनों का अभ्यास स्वच्छ और खुले हवादार वातावरण में करें। इन आसनों को क्रम बद्ध रूप से करना चाहिए।

1. प्रणामासन

पहले सीधे खड़े हो जाएँ। फिर दोनों हाथों को कंधे के समानांतर उठाएँ। दोनों हथेलियों को ऊपर

की ओर ले जाएँ। हथेलियों के पृष्ठभाग एक-दूसरे से चिपके रहें। फिर उन्हें उसी स्थिति में सामने की ओर लाएं। तत्पश्चात नीचे की ओर गोल घुमाते हुए नमस्कार की मुद्रा में खड़े हो जाएँ।

2. हस्तउत्तानासन

अब गहरी श्वास भरें और दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाएँ। अब हाथों को कमर से पीछे की ओर झुकाते हुए भुजाओं और गर्दन को भी पीछे की ओर झुकाएँ।

3. हस्तपादासन

इस स्थिति में आगे की ओर झुकते हुए श्वास को धीरे-धीरे बाहर निकालें। हाथों को गर्दन के साथ, कानों से लगाते हुए नीचे लेकर जाएँ और हाथों से पृथ्वी का स्पर्श करें। अब कुछ क्षण इसी स्थिति में रुकें और घुटनों को एक दम सीधा रखें।

4. अश्वसंचालासन

इस स्थिति में हथेलियों को भूमि पर रखें। श्वास को लेते हुए दायें पैर को पीछे की ओर ले जाएँ। अब गर्दन को ऊपर की ओर उठाएँ। अब इस स्थिति में कुछ समय तक रुकें।

5. अधोमुखश्वानासन

इस स्थिति में श्वास को धीरे-धीरे छोड़ते हुए बायें पैर को पीछे की ओर ले जाएँ। ध्यान रहें इस स्थिति में दोनों पैरों की एड़ियाँ परस्पर मिली हुई हों। अब गर्दन को नीचे झुकाकर ठोड़ी को कंठ में लगाने का प्रयास करें।

6. अष्टांग नमस्कारासन

इस स्थिति में धीरे धीरे श्वास लें और शरीर को पृथ्वी के समानांतर रखें जैसे आप दंडवत प्रणाम के समय होते हैं, ठीक उसी के प्रकार शरीर को पृथ्वी के समानांतर रखें। अब घुटने, छाती और ठोड़ी पृथ्वी पर लगा दें। छाती को थोड़ा ऊपर उठाएँ। अब धीरे-धीरे श्वास छोड़ें।



7. भुजंगासन

इस स्थिति में धीरे-धीरे श्वास को लेते हुए छाती को आगे की ओर खींचें। हाथों को सीधे रखें, हथेलियां पृथ्वी पर लगी हों। अब गर्दन को धीरे-धीरे पीछे की ओर ले जाएं। घुटने पृथ्वी का स्पर्श करें तथा पैरों के पंजे खड़े रहें।

8. अधोमुखश्वानासन

यह स्थिति पांचवीं स्थिति के समान है। इस स्थिति में श्वास को धीरे-धीरे छोड़ते हुए बायें पैर को पीछे की ओर ले जाएं। ध्यान रहें इस स्थिति में दोनों पैरों की एड़ियां परस्पर मिली हुई हों। अब गर्दन को नीचे झुकाकर ठोड़ी को कंठ में लगाने का प्रयास करें।

9. अश्वसंचालासन

यह स्थिति चौथी स्थिति के समान है। इस स्थिति में हथेलियों को भूमि पर टिकाएं। श्वास को लेते हुए दायें पैर को पीछे की ओर ले जायें। अब गर्दन को ऊपर उठाएँ। अब इस स्थिति में कुछ समय तक रुकें।

10. हस्तपादासन

यह स्थिति तीसरी स्थिति के समान है। इस स्थिति में आगे की ओर झुकते हुए श्वास को

धीरे-धीरे बाहर निकालें। हाथों को गर्दन के साथ, कानों से लगाते हुए नीचे लेकर जाएँ और हाथों से पृथ्वी का स्पर्श करें। अब कुछ क्षण इसी स्थिति में रुकें और घुटनों को एक दम सीधा रखें।

11. हस्तउत्तानासन

यह स्थिति दूसरी स्थिति के समान है। इसमें धीरे धीरे श्वास भरते हुए दोनों हाथों को कानों से सटाते हुए ऊपर की ओर तानें तथा भुजाओं और गर्दन को पीछे की ओर झुकायें।

12. प्रणामासन

यह स्थिति पहली स्थिति के समान रहेंगी। सूर्य नमस्कार को करने के बाद कुछ देर श्वासन करें।

सूर्यनमस्कार की बारह स्थितियाँ हमारे शरीर के समस्त रोगों को दूरकर हमें निरोगी बनाती हैं। इसके नियमित अभ्यास से शरीर की फ़ालतू चर्बी कम हो जाती है। तो इस आसन के नियमित अभ्यास से निरोगी काया को पायें और एक स्वस्थ जीवन बितायें।

श्याम बाबू ओझा

रूम न. 17 सुभाषहाता, लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ 226020, मो0 9454049918



समाचार

साहित्यिक कृति "गिरगिट" का कन्नड़ भाषा में प्रकाशन

भारतीय पुलिस सेवा के ख्याति लब्ध पुलिस अधिकारी डॉ० अखिलेश निगम 'अखिल' के कहानी संग्रह 'गिरगिट' का कन्नड़ भाषा में ऊसर बल्ली (भावानुवाद) प्रकाशित हुआ और इसका विमोचन कर्नाटक प्रान्त के शिवमोग्गा जिले में राजभाषा संघर्ष समिति, नई दिल्ली के कर्नाटक प्रान्त की शिव मोग्गा जिला इकाई के तत्वावधान में किया गया। इस पुस्तक को डॉ० जी०एस० सरोजा, सेवानिवृत्त प्राचार्या, राष्ट्रीय पदवी पूर्व कालेज

शिवमोग्गा द्वारा कन्नड़ भाषा में भावानुवाद किया गया।

डॉ० अखिलेश निगम पुलिस विभाग में अपने प्रशासनिक उत्तर दायित्वों का भली-भांति निर्वहन करने के साथ-साथ साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं, इनकी कविता, कहानी, समीक्षा आदि विधाओं में कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।



श्री भाऊराव देवरस नामाक्षरी दिग्दर्शन भावोद्गार

रमेश बाबू शर्मा 'व्यस्त'

- श्री. श्रीमुख की शोभा विरल, तदनुरूप व्यक्तित्व ।
गहन विवेचन शक्ति से, स्वयम् दिखा वर्चस्व ॥
- भा. भाते थे जिनको सतत, संयमशील विचार ।
परम प्रखर गुणवान थे, सद्भुत हृदय उदार ॥
- ऊ. ऊर्ध्वांग उन्नत रखा, कर निश्छल व्यवहार ।
धर्म-निष्ठ अनुपम रहे, पायी कीर्ति अपार ॥
- रा. राष्ट्र समुन्नतकर सके, खोजे विविध उपाय ।
कर्म-निष्ठ अविरल रहे, सेवा-व्रत अपनाय ॥
- व. वक्ता थे सुलझे हुए, ध्येयशील अभिराम ।
वाणी में लालित्य था, मुखर रखा निज नाम ॥
- दे. देश धर्म पर अटल रह, लिए समर्पित-भाव ।
किया संगठन राष्ट्र-हित, था हिय में सम भाव ॥
- व. वक्तव्यों में सरसता, के थे वे पर्याय ।
मंत्र मुग्ध करते रहे, ज्ञान-सुधा वर्षाय ॥
- र. रजनी पति की भाँति ही, था गुण शील स्वभाव ।
सदा सौम्य सद-वृत्ति का, चहुँ दिशि दिखा प्रभाव ॥
- स. सधन ज्ञान भण्डार से, दीप्त रहा व्यक्तित्व ।
'व्यस्त' सतत प्रिय जनों से, नित्य प्रेम अपनत्व ॥

सी-61, सूरजमल विहार, दिल्ली
मो0 9899539361



पाठकों से निवेदन...

“सेवा संवाद” आपकी अपनी पत्रिका है, इसकी उपयोगिता, श्रेष्ठता और सर्वप्रियता आपके जीवंत सहयोग के बिना, संभव नहीं है, इसलिए आपसे अनुरोध है कि आप इसे पढ़कर चुप न बैठें, बल्कि हमें बताएँ कि आपको कौन सा आलेख या सामग्री अच्छी लगी और पत्रिका को अधिक सुंदर एवं उपयोगी बनाने हेतु अपने सुझाव भी भेजें—स्वागत है—संपादक

निवेदनम्

सभी से विनम्र अनुरोध है कि विज्ञापन एवं ग्राहक शुल्क एवं पत्रिका को प्रसार में अपना सक्रिय सहयोग बनाये रखने की अपार कृपा करें। समाचारों को कैमरे से फोटा, टाइप मैटर या स्कैन किया मैटर ही ई-मेल, डाक-कोरियर से भेजने की उदारता रखे। कृपया मोबाइल के फोटा, अखबार की कतरन व फोटों खींचें प्रेस नोट समाचार व्हाट्सअप पर कदापि नहीं भेजे।

आपके सुझाव, प्रतिक्रिया पत्रों का हर समय स्वागत है। पाठकों के पत्रों को छापने पर हमें खुशी होगी।

राष्ट्र, समाज के जीवन में खुशियों का इन्द्रधनुष साकार रूप ले। इसके लिए लेखकों कवियों से रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। समस्यापूर्ति हेतु लेख कविगण समय पर भेजने की कृपा करें।

पाठकीयम्

पत्रिका का कलेवर तथा सामग्री में उत्तरोत्तर गुणवत्ता का कसाव बहुत ही प्रीतिकर लगता है। सम्पादक का परिश्रम श्लाघनीय है। पत्रिका में आचार: परमों धर्म: का जो अभियान समस्यापूर्ति के रूप में स्तम्भ देकर चला रखा है। यह स्वागत योग्य है। कविताओं के साथ-साथ कहानियों को स्थान दिया जाना ठीक रहेगा।

डॉ० बृजेश कुमार श्रीवास्तव

सेवा संवाद का जुलाई 2019 का अंक पढ़ने को मिला इसमें खुद की पहचान विषय पर विचारों उत्तेजक लेख से अतीव खुशी हुयी। नयी-नयी जानकारियां मिली बहुत प्रबोधक सामग्री पत्रिका में दी गयी है। इसको पढ़कर प्रसन्नता हुयी। पुस्तकें की समीक्षा और पाठकों के पत्रों पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

दिलीप तिवारी

सेवा संवाद का जो रूप आजकल संवारा गया है वह काफी सराहनीय है। इसके लेख कविताएं और स्तम्भ ऐसे हैं जिनमें नयी-नयी जानकारियां प्राप्त होती हैं। सह-सम्पादक का प्रयास और परिश्रम अभिनन्दन योग्य है पत्रिका में हम कब होंगे पानी के लिए जिम्मेदार पर भी सामग्री समय-समय पर दी जानी चाहिए।

प्रतीक कुमार

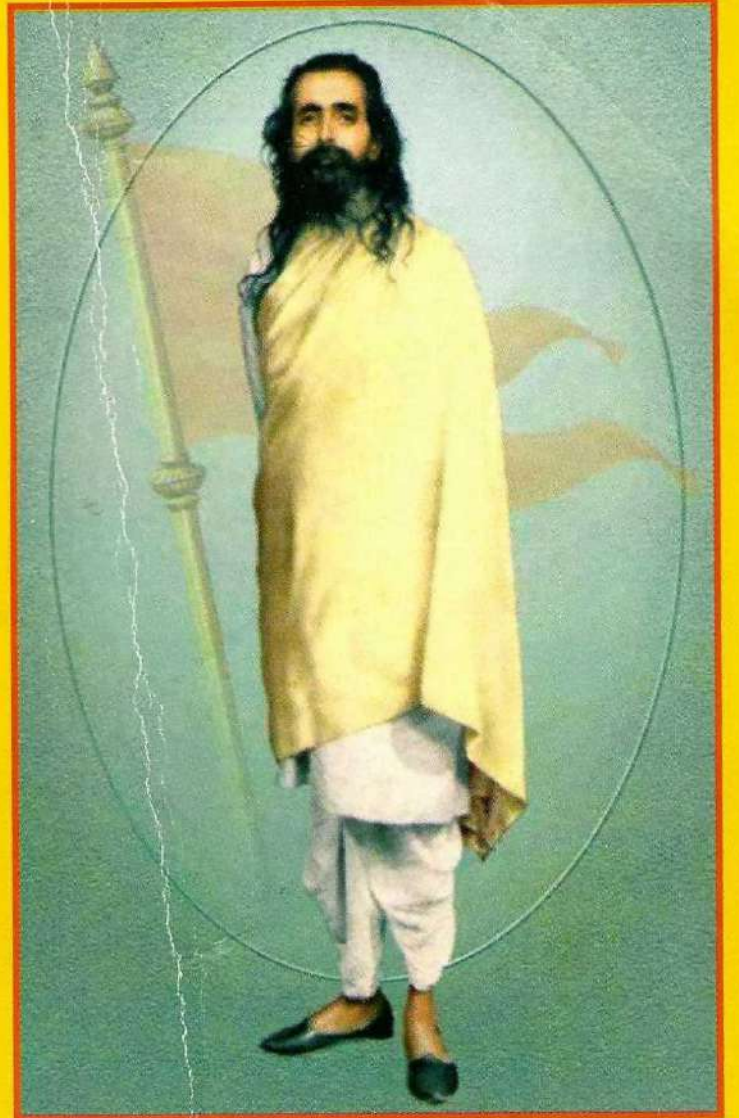
जुलाई 2019 सेवा संवाद में, उच्चस्तरीय सामग्री प्रस्तुत करने के लिए सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत साधुवाद श्याम बाबू ओझा का आलेख बहुत भाया। योग पर रोचक जानकारियां मिली। सभी लेख गुणवत्ता परक बने हैं। पत्रिका में सेवा सम्बन्धी के लिए तथा काव्य-गीत विषयों पर भी सामग्री देना उचित होगा। कृपया विचार अवश्य करें।

राजीव वाजपेयी

माधवराव सदाशिव गोलवलकर

नामाक्षरी शब्द चित्र

- मा. माधव परम उदार थे,
कर्मवीर मतिमान।
- ध. धरा धर्म हित समर्पित,
रहे सदा गतिमान॥
- व. वक्ता प्रखर सुबुद्धि से,
सेवा में तल्लीन।
- रा. राष्ट्र भक्ति अरु-साधना,
पथ के पथिक कुलीन॥
- व. वनजन गिरिजन ग्रामजन,
था सबको विश्वास।
- स. सत्य प्रेम सद्भाव का,
होगा दिव्य प्रकाश॥
- दा. दाता माता पिता इव,
हित चिन्तक कविराज।
- शि. शिक्षक शिल्पी संतप्रिय,
संघनिष्ठ ऋषिराज॥
- व. वसुधा इव गंभीर तुम,
प्रतिभा-गुण सम्पन्न।
- गो. गो-गीता गंगा सरिस,
परहित नित्य प्रसन्न॥
- ल. लघु जीवन में दिव्यता,
त्याग समर्पण भाव।
- व. वपु सुन्दर कोमल हृदय,
वाणी-मधुर स्वभाव॥
- ल. लक्ष्य एक सम्मुख रहा,
हिन्दु राष्ट्र उत्थान।
- क. कर्मशील तुम रहे सदा,
जब तक घट में प्राण॥
- र. रस अखण्ड आनन्दमय,
जिनके गुरु का नाम।
ऐसे माधव राव को,
वन्दन नमन प्रणाम॥



कर सके साकार ऋषिवर, आपकी हम कल्पना।
दीजिये आशीष अपना, भावमय है याचना॥

पूज्य श्री गुरु जी

डॉ० शिव भूषण त्रिपाठी

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में दिव्यांग रोगी का नेत्र परीक्षण करते हुए चिकित्सक गण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण करते हुए चिकित्सक गण



नेत्र कुम्भ चिकित्सालय में नेत्र परीक्षण करते हुए चिकित्सक गण